भू-दर्पण

वर्ष 2022-23

अंक-चतुर्थ

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, मानचित्र भवन, 5 विभूति खण्ड , गोमती नगर, लखनऊ

(विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार)

भू-दर्पण अंक- चतुर्थ

संरक्षक

राजीव कुमार श्रीवास्तव
निदेशक

सम्पादक

अर्जुन सिंह, अधीक्षण सर्वेक्षक
राजेश कुमार, अधीक्षण सर्वेक्षक
उमेश मिश्र, अधीक्षण सर्वेक्षक
बाल गोविन्द राम, अधीक्षण सर्वेक्षक

सह-सम्पादक

अमित कुमार वर्मा, सहायक

सम्पादन सहयोगी

शशांक कुमार सिंह, सहायक (टंकण एवं छायांकन)
ब्रजेन्द्र सिंह, सहायक (ग्राफिक्स एवं डिजाइनिंग)

प्रकाशक

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
5, विभूति खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ – 226010

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है ।

श्री सुनील कुमार
भा.व.से.
Sunil Kumar
I.F.S.

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं0 37,
देहरादून – 248001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No. – 37,
Dehradun -248001, (Uttarakhand), India

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, लखनऊ कार्यालय अपनी राजभाषा पत्रिका 'भू-दर्पण' के तीन अंकों के सफल प्रकाशन के बाद अंक-4 का प्रकाशन करने जा रहा है । हिन्दी हमारी राजभाषा है और हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन हिन्दी के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । हम सभी अपने दैनिक जीवन और सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करते हैं क्योंकि हिन्दी भाषा विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम है तथा आसानी से सभी जन-मानस के समझ में आ जाती है । राजभाषा हिन्दी भारतवर्ष की एकमात्र ऐसी भाषा है जिसका लगभग सम्पूर्ण भारत में प्रयोग किया जाता है । राजभाषा पत्रिकाओं के माध्यम से हम हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका लेखकों को उनके विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करेगी तथा उनकी रचनात्मकता को बढ़ाएगी । मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इसके लेखन व प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(सुनील कुमार)
संयुक्त सचिव एवं
भारत के महासर्वेक्षक

Tel: 00 -91-135-2744268/2747051 -58 Extn -5001
E-mail: sgi.soi@gov.in

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आंकडा केंद्र द्वारागृह-पत्रिका " भू-दर्पण" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, जो कि हमारी राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अत्यंत अनिवार्य है।

गृह-पत्रिका न केवल राजभाषा का प्रचार-प्रसार करती है बल्कि यह अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी के क्षेत्र में सृजनात्मक अभिरुचियों को भी उजागर करती है।हिन्दी देश का गौरव है।यह भारतीय संस्कृति की आत्मा है और अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावी माध्यम भी है। हमारा देश हिन्दी के उत्थान के लिए काफी प्रयत्नशील है, अतः हमें देश की उन्नति हेतु हमेशा हिन्दी के विकास के लिए तत्पर रहना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि भू-दर्पण में लिखी रचनायें,कविताएँ,कहानियाँ व हिन्दी लेख काफी रोचक एवं प्रेरणादायक होंगे, जो कि अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी हिन्दी लेखन के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं सभी लेखकों,रचनाकारों तथा संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिनके सहयोग से गृह पत्रिका " भू-दर्पण" का पुनः सफलतापूर्वक प्रकाशन संभव हुआ।

------ जय हिंद ------

अमरदीप

(अमरदीप सिंह) कर्नल
अपर महासर्वेक्षक
उत्तरी क्षेत्र

संरक्षक की कलम से.....

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आकड़ा केन्द्र की राजभाषा पत्रिका **'भू-दर्पण'** का यह अंक 4 हिन्दी पखवाड़े के शुभ अवसर पर आप सभी को समर्पित करते हुए अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है ।

यह पत्रिका कई मायनों में महत्वपूर्ण है । प्रथमतया तो यह इस कार्यालय की पहली ई-पत्रिका है तथा ऐसे समय में प्रकाशित की जा रही है जब इस कार्यालय का प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी भारत सरकार की महत्वाकाँक्षी परियोजना स्वामित्व के लक्ष्यबद्ध कार्य में लगा हुआ है । इसके बावजूद कार्यालय के सभी कार्मिकों ने अपना बहुमूल्य योगदान देकर पत्रिका के प्रकाशन को सुनिश्चित किया है । कार्यालय में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति सकारात्मक सोच एवं उत्साह प्रशंसनीय है ।

भाषा के निर्माण में प्रत्येक व्यक्ति का कुछ न कुछ योगदान अवश्य रहता है । इस संबंध में इमरसन का कथन है कि "भाषा वह नगर है जिसे खड़ा करने में हर व्यक्ति ने कोई न कोई पत्थर लगाया है ।" भाषा भाव और विचारों का माध्यम मात्र नहीं है बल्कि यह व्यक्ति, समाज, तथा राष्ट्र को सुदृढ़ और जीवंत बनाने का सर्वमान्य एवं सशक्त साधन भी है । सशक्त भाषा केवल व्यक्ति का विकास ही नहीं करती, अपितु राष्ट्र के विकास में भी सहायक होती है । अत: राजभाषा हिन्दी को व्यापक तथा लोकप्रिय बनाने के लिए हम सबका सक्रिय योगदान बहुत आवश्यक है और केन्द्रीय सरकार के कार्मिक होने के नाते हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम हिंदी को प्राथमिकता दें ।

मैं, पत्रिका के लेखन व प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों विशेषकर संपादक मंडल की कोटि-कोटि प्रशंसा एवं हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ । साथ ही यह अपेक्षा करता हूँ कि राजभाषा हिंदी के प्रति आप सभी की सकारात्मक सोच अनवरत जारी रहेगी । इसके अतिरिक्त मैं उन सभी व्यक्तियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनके परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सहयोग के कारण पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका ।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना एवं आशा करता हूँ कि पत्रिका आप सभी को पसन्द आयेगी । पत्रिका को अधिक सार्थक एवं प्रभावशाली बनाने के लिये आपके सुझावों का सदैव स्वागत है ।

(राजीव कुमार श्रीवास्तव)

निदेशक

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आकड़ा केन्द्र

भू-दर्पण अंक- चतुर्थ

अनुक्रमणिका

क्र0 सं0	लेख/रचनायें	लेखक/रचनाकार(सर्व श्री)	पष्ठ सं0
1	कालागढ़/जिम कार्बेट नेशनल पार्क (टाइगर रिजर्व)का सर्वेक्षण कार्य	बाल गोविन्द राम, अधीक्षण सर्वेक्षक	6
2	बादलों के ऊपर	प्रदीप कुमार आर्य, अधीक्षण सर्वेक्षक	9
3	उचित –अनुचित	अमित कुमार वर्मा, सहायक	13
4	अनुभूति	राजेश कुमार, अधीक्षण सर्वेक्षक	15
5	परिवार का प्यार	संकलित	16
6	भारतीय सामाजिक परिवेश में रामचरित मानस का महत्व	प्रमोद कुमार, कार्यालय अधीक्षक	17
7	सीनियर सिटीजन : खत्म होने जा रहा एक युग	संकलित	19
8	भ्रष्टाचार का स्वरूप, दुष्प्रभाव एवं इसकी रोकथाम	देवेन्द्र कुमार सिंह, सहायक	20
9	मेरी भी सुनों	मेजर विकास मलिक, उप अधीक्षण सर्वेक्षक	22
10	प्रणाम का महत्व	संकलित	23
11	रिश्ते	अर्जुन सिंह, अधीक्षण सर्वेक्षक	24
12	कोरोना महामारी सीख एवं उपलब्धि	शशांक कुमार सिंह, सहायक	26
13	विचार	संकलित	28
14	वर्तमान की जरूरत -शिक्षा के साथ विद्या	नवीन कुमार, सहायक	29
15	आजादी के आईने	शशांक कुमार सिंह©, सहायक	31
16	दशरथ मांझी	गोयल कुमार एम0टी0एस0	32
17	पंचेश्वर बहुद्देशीय परियोजना पूर्णागिरी बाँध (एक संस्मरण)	प्रमेश बिष्ट, अधिकारी सर्वेक्षक	33
18	आखिर तो मिट्टी हो जाना है	अजय पटेल, एम0टी0एस0	34
19	अर्थी की अर्थव्यवस्था	शशांक कुमार सिंह, सहायक	35
20	साम्राज्यवाद का नाश हो	ब्रजेन्द्र सिंह, सहायक	36
21	स्वामित्व योजना एक चुनौती- उत्तर प्रदेश	प्रदीप कुमार आर्य, अधीक्षण सर्वेक्षक	37
	फोटो गैलरी	अमित कुमार वर्मा, सहायक ब्रजेन्द्र सिंह, सहायक	43-53

कालागढ़/जिम कार्बेट नेशनल पार्क (टाइगर रिजर्व)का सर्वेक्षण कार्य

बाल गोविन्द राम, अधीक्षण सर्वेक्षक

वर्ष 2004 की बात है, मार्च माह में जी0 एण्ड आर0 बी0 देहरादून द्वारा आयोजित **पाम टाप** प्रशिक्षण (एक सप्ताह के लिए) हेतु 91 पार्टी (उ0क्षे0) लखनऊ से देहरादून गया था । वहा पर एक हफ्ते के सफल प्रशिक्षण के आखिरी दिन उ0क्षे0 देहरादून के तत्कालीन निदेशक ब्रिगेडियर एस0 के0 पाठक द्वारा मैसेज भेजकर हमें अपने चैम्बर में उपस्थित होने का निर्देश दिया गया । क्लास समाप्त होने के बाद निदेशक महोदय के निर्देशानुसार उनके चैम्बर में उपस्थित हो गये । उनके द्वारा हमारे प्रशिक्षण की सफलता से सम्बन्धित कुशल-क्षेम पूछने के बाद 33 पार्टी (उ0क्षे0) से तत्काल अटैच होकर कालागढ़ डैम, जिम कार्बेट नेशनल पार्क (टाइगर रिजर्व)व उसके आस-पास के क्षेत्र का नयी तकनीक **पाम टाप** द्वारा सर्वेक्षण कार्य(लगभग 5 माह) हेतु निर्देश दिया गया । उनके इस आदेश से मानो पैरों तले जमीन खिसक गई हो क्योंकि लखनऊ से हम सिर्फ एक हफ्तें की प्रशिक्षण हेतु मन बनाकर गये थे । वहाँ पहुचकर तत्काल सर्वेक्षण कार्य हेतु मूव करना और वह भी जिम कार्बेट नेशनल पार्क (टाइगर रिजर्व)क्षेत्र का जिसके लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे । विशेषकर टाइगर रिजर्व के नाम पर मन में एक दहशत का भाव उत्पन्न हो रहा था कि पता नहीं फिल्ड कार्य के बाद सही सलामत वापसी हो भी पायेगी या नहीं । हॉलाकि ब्रिगेडियर पाठक साहब से बच्चों के नये सत्र से शिक्षा प्रारम्भ होने की स्थिति से अवगत कराते हुए फिल्ड कार्य से मुक्त करने का आग्रह किया गया लेकिन उनके द्वारा आखिरी मे एक बात कही गयी कि आर्मी में खूखरी चल गयी तो चल गयी । इसके आगे कुछ कहने सुनने को बचा ही नही था ।

इसलिए उनके आदेश का पालन करते हुए फिल्ड जाने हेतु हम लोग 33 पार्टी के तत्कालीन प्रभारी श्री संदीप श्रीवास्तव साहब के यहॉ रिपोर्ट कर दिये । 33 पार्टी से फिल्ड सम्बन्धित सभी तैयारियाँ पूर्ण कर चार सर्वेक्षकों की टीम श्री शशिकान्त, सर्वेक्षक, शिविर अधिकारी के साथ क्षेत्रीय कार्य हेतु कालागढ़, पौढी गढ़वाल के लिए देहरादून से कूच कर गयी । पूरे लाव-लश्कर के साथ हम सब पूरी सर्वे टीम कालागढ़ डैम क्षेत्र में पहुँच गये । वहां पर डैम के सक्षम अधिकारी से कैम्पिंग साइट हेतु आग्रह किये । उनके द्वारा पूरा सहयोग करते हुए उनके पास उपलब्ध एक बड़ा हाल उपलब्ध कराया गया जो कि हमारे सर्वेक्षण टीम के लिए अपर्याप्त था । लिहाजा हम लोग वहाँ नहीं रूक सकते थें शिविर मुख्यालय की तलाश में डैम क्षेत्र से कुछ बाहर निकल कर सिंचाई विभाग का एक पुराना गेस्ट हाउस मिला जहॉ पर हमारे फिल्ड कर्मियों द्वारा साफ-सफाई कराकर शिविर मुख्यालय लायक बनाया गया । वहॉ रात्रि विश्राम के बाद सुबह हम लोग चाय के साथ पेपर पढ़ रहे थे जिसमें मिडिया द्वारा खूब अच्छे से उछाला गया था कि डैम के अधिकारियों ने देहरादून से आयी सर्वेक्षण टीम को अपने क्षेत्र में जगह उपलब्ध नहीं करा पाई है । जबकि ऐसा नहीं था जो उनके पास था उन्होने उपलब्ध कराया था । तब हमने मिडिया कर्मियों के बारे में महसूस किया कि ये लोग कुछ भी अपने हिसाब से छाप सकते है । कुछ देर के बाद एक पत्रकार भी वहाँ आ धमके जो कि डैम अधिकारियों के विरूद्ध कुछ बयान देने के लिए उकसाने लगे । हम लोगों ने उससे काफी आग्रह किये कि हम लोगों से सम्बन्धित कोई भी खबर अपने समाचार पत्र में न छापे क्योकि हमें भी यह डर था कि हमारे मुख्यालय देहरादून को इस तरह की खबरों के बारे में पता चलने पर हमारे सर्वेक्षण टीम के लिए सहीं नही था । खैर

शिविर मुख्यालय स्थापित हो गया और चारों सर्वेक्षकों को सम्बन्धित आबंटित क्षेत्र का स्कैन्ड डाटा पाम टाप में लोडकर अपने-अपने क्षेत्र में रवाना कर दिया गया । सर्वेक्षण हेतु आबंटित अन्य क्षेत्रों के अलावा मेरे कार्य क्षेत्र में कालागढ़ डैम व जिम कार्बेट नेशनल पार्क का टाइगर रिजर्व क्षेत्र भी आता था । नेशनल पार्क के अन्दर सर्वेक्षण कार्य हेतु सक्षम अधिकारियों की अनुमति से एक रूम लगभग एक हफ्ते के लिए हमें उपलब्ध करा दिया गया था जोकि नेशनल पार्क के कोर एरिया ढ़िकाला गेस्ट हाउस के बिल्कुल समीप था ।

यहाँ पर लगभग एक सप्ताह का सर्वेक्षण कार्य बहुत रोमांचक व डरावना भी रहा । एक दिन मैं अपने स्टाफ व पार्क प्राधिकरण की तरफ से उपलब्ध कराये गये गन मैन के साथ सर्वेक्षण कार्य हेतु निकला था । पार्क के अन्दर वन वे व कच्चा रास्ता था । रास्ते में एक जगह थोड़ा चौड़ा जगह मिला जिसे देखकर मैने मजाक में अपने साथियों से बोला कि लगता है यहाँ हाथियों का क्रिकेट मैदान है । इसके बाद मुश्किल से 100 मीटर आगे बढ़ने के बाद देखा कि हमारे जीप के थोड़ा आगे लगभग 10-15 हाथियों का झुण्ड रोड पर खड़ा है । देखते ही देखते इतनी ही दूरी पर करीब 10 -10 हाथी और जीप के दाये व बायें आकर खड़े हो गये । चूकि रास्ता बिल्कुल सिंगल ट्रैक था जिससे गाड़ी बैक नहीं हो सकती थी और आगे तथा दायें-बायें का तो कोई सवाल ही नहीं उठता था । अब फिर क्या था गनमैन के मार्गदर्शन में हम लोग बिल्कुल साँस रोके जीप में दुबके रहें और तीनों दिशाओं से हाथियों ने हमें अपने गन प्वाइंट पर ले रखा था । हमने गनमैन को फायर करने के लिए कहा तो उसका यह कहना था कि जब तक हाथी अटैक नहीं करेगा तब तक हमें फायर करने का आदेश नहीं है । उसने यह भी आश्वस्त किया कि हम लोग कोई हरकत नही करेंगे और उन हाथियों को यह विश्वास दिलाया जाय कि हम उनका नुकसान नहीं करेगें तो वे भी हमें कोई नुकसान नहीं करेगे । जैसा गनमैन कह रहा था हुआ भी वही, लगभग आधे-पौन घंटे तक हम लोग और सभी हाथी एक दूसरे को देखते रहे, उसके पश्चात हमारे जीप के आगे का हाथियों का झुण्ड रोड छोड़कर नीचे उतर गया और देखते-देखते जीप के दाये व बायें तरफ खड़े हाथियों का झुण्ड भी इनके पीछे –पीछे नीचे उतर गया । उसके बाद हमने चैन की साँस लेते हुए उस दिन का सर्वेक्षण कार्य पूरा किया ।

ऐसा ही वाक्या एक दिन सर्वेक्षण कार्य से वापस के दौरान घटित हुआ जब एक तस्कर हाथी (ऐसा हाथी जो बदमाश एवं लड़ाकू होते है तथा जिन्हे सामान्य हाथी अपने समूह से बाहर कर देते हैं, पहचान के लिए इनकी पूँछ भी कटी होती है) अचानक हमारी जीप के सामने आ कर खड़ा को गया तथा जीप का एक चक्कर काटकर पास में एक पेड़ के सहारे हमारी तरफ मुँह करके खड़ा हो गया जैसे ही हम जीप आगे बढ़ाने की कोशिश करते वह हमले की पोजीशन में आ जाता तथा अपनी सूढ़ से जीप के अन्दर मिट्टी फेकने लगता । हमें गनमैन ने यह समझाया कि इसके सामने चुपचाप रहने में ही भलाई है क्योकि ये बदमाश हाथी होते है। अब आप लोग अपनी सलामती के लिए केवल भगवान से प्रार्थना करिये क्योकि इसके अलाँवा दूसरा कोई रास्ता नही है ।

हम लोग अपने अपने ईष्ट देव से प्रार्थना करने लगें और लगभग 45 मिनट के बाद भगवान ने हमारी सुन ली जब वो तस्कर हाथी वहाँ से चला गया । हमने अपने ईष्ट देव को धन्यवाद दिया तथा वापस अपने गेस्ट हाउस ढ़िकाला कैम्प पहुचें । इस रोमांच एंव खतरनाक सर्वेक्षण कार्य के उपरान्त वह सुखद क्षण भी आया जब कालागढ़ डैम के आधिकारियों के सहयोग से हमें डैम के अन्दर जाकर विद्युत उत्पादन एंव उसके वितरण को बहुत ही नजदीक से देखने एंव समझने का मौका मिला ।

सर्वेक्षण कार्य का निरीक्षण शिविर अधिकारी व विंग प्रभारी द्वारा नियमित अन्तराल पर किया जाता रहा। लेकिन आखिर में हमारे तत्कालीन निदेशक बिग्रेडियर एस0 के- पाठक साहब द्वारा अन्य सर्वेक्षकों के क्षेत्रीय कार्य के निरीक्षण के उपरान्त अन्त मे मेरे क्षेत्रीय कार्य के निरीक्षण का दिन आया । शिविर अधिकारी ने निदेशक व विंग प्रभारी को उनके पद व गरिमा के अनुसार फारेस्ट गेस्ट हाउस, रामनगर में ठहराया था और मेरा कैम्प उस

समय लगभग 60-70 कि0मी0 दूर एक दूसरे फारेस्ट गेस्ट हाउस में था । निरीक्षण कार्य कालागढ़ डैम पर हीं होना था रास्ता कच्चा व बहुत हीं उबड़-खाबड़ होने की वजह से मुझे निरीक्षण प्वांइन्ट पर पहुँचने में निर्धारित समय से लगभग एक घण्टे की देरी हो गयी थी ।

देर से पहुँचने के कारणों से संतुष्ट होने के बाद निदेशक महोदय ने निरीक्षण कार्य किया जिसमें वे नयी तकनीक **पाम टाप** से सर्वेक्षण कार्य को लेकर बहुत संतुष्ट हुए और अच्छे इन्सपेक्सन रिमार्क के साथ –साथ पूरी **पाम टाप** सर्वेक्षण टीम को मानदेय हेतु अपनी अनुशंसा भेजने का आश्वासन दिया । इसके बाद देहरादून के लिए प्रस्थान कर गये ।

क्षेत्रीय कार्य की समाप्ति के उपरान्त कार्य क्षेत्र में पड़ने वाले प्रशासनिक सीमाओं (नैनीताल/जिले/राज्य/फारेस्ट) के सत्यापन के दौरान उत्तराखण्ड पहाड़ी क्षेत्रों की यात्रायें जिसमे रामनगर, नैनीताल आदि शामिल थे, बहुत ही आनन्दायक रहीं । इसके उपरान्त पूरी सर्वेक्षण टीम सकुशल मुख्यालय देहरादून पहुँचकर अपना स्टोर/अभिलेख सम्बधित अधिकारियों को सुपुर्द कर अपने- अपने विंग में रिपोर्ट कर गये । इस प्रकार से कालागढ़ डैम,जिम कार्बेट नेशनल पार्क व आस पास के क्षेत्र का सर्वेक्षण कार्य सम्पन्न हुआ जो कि बहुत ही रोंमांचक रहा ।

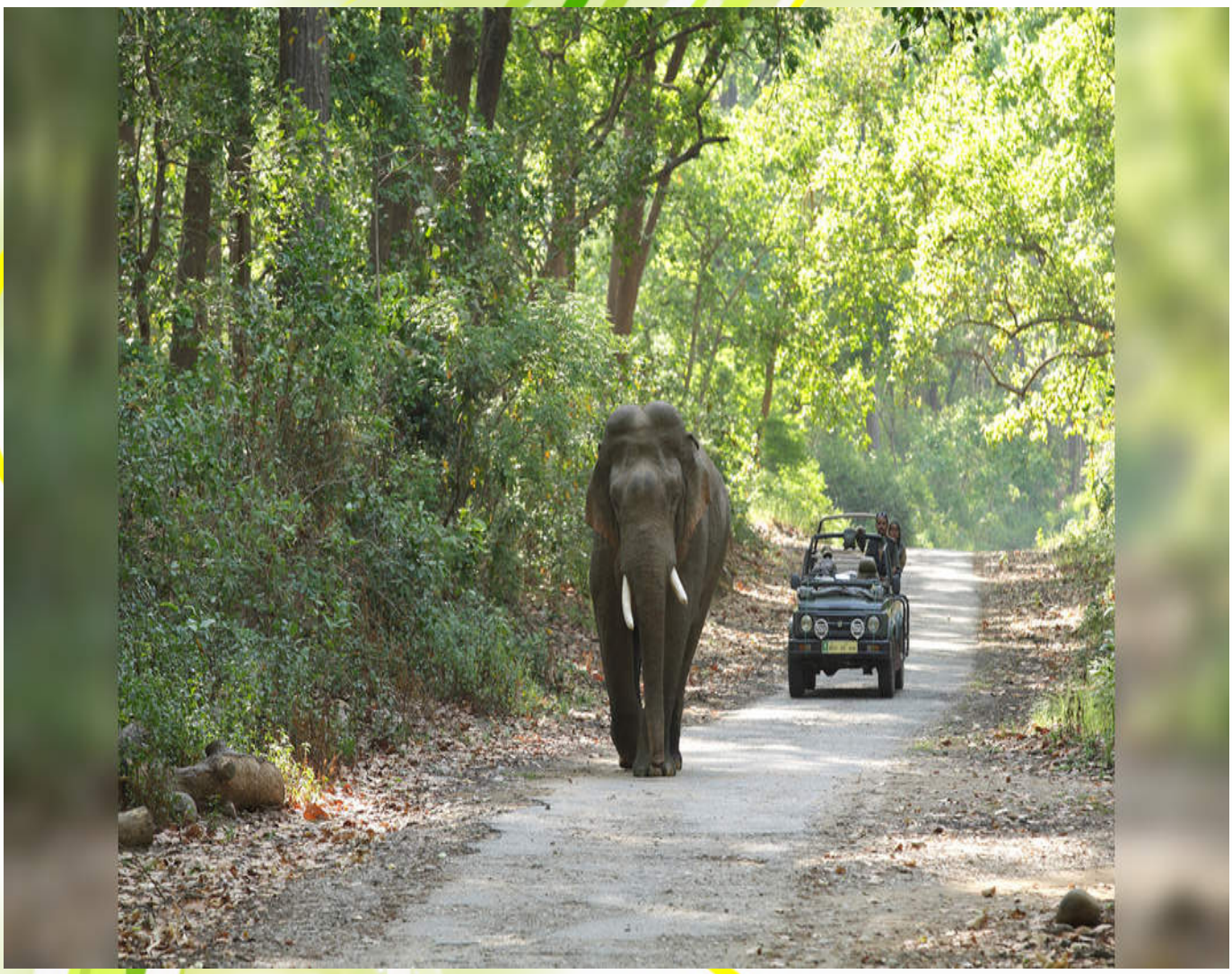

बादलों के ऊपर

प्रदीप कुमार आर्य, अधीक्षण सर्वेक्षक

कई साल पहले की बात है कि एक दिन कार्यालय में सुबह-सुबह गार्ड का फोन आया, आपसे टेलीकाम कम्पनी के कुछ अधिकारी मिलना चाहते हैं, कि मैंने सुरक्षा गार्ड को हिदायत दी-ठीक है, भेज दो। वैसे तो आमतौर पर जिस भी आगन्तुक को कार्यालय में कोई कार्य होता है तो मेरे पास ही आते हैं । थोड़ी देर बाद ही तीन लोग मेरे केबिन में पहुचें, मैंने उनसे बैठने का आग्रह किया, उन सब पर ध्यान से एक नजर दौड़ायी तो सभी वेल-ड्रेस्ड थे, साथ-साथ उनकी कद काठी भी काफी बहुत आकर्षक एंव कारपोरेट लुक था । उन सब में से एक ने सभी लोगों का परिचय कराया कि वे एक टेलीकाम कम्पनी में महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत है।

औपचरिकता पूरी होने के पश्चात मैनें पूछा- बताईये मै आपकी क्या सेवा कर सकता हू । उन तीनों में से एक ने कहा कि हमारी इस शहर में एक कारपोरेट बिल्डिंग है, उसकी हाईट का एन0ओ0सी0 चाहिये ।

हमने तत्परता से कहा- इसमे तो कोई समस्या नही, हमारी सर्वेक्षण टीम सर्वे करके आपको हाईट प्रदान कर देगी, इसके लिए आवेदन देना पड़ेगा, सर्वेक्षण का जो भी चार्ज आयेगा., इस कार्यालय में बैंक ड्राफ्ट द्वारा जमा करना पड़ेगा, यह सब मैंने एक ही सांस में बता दिया । तीनों मुझे एक टक देख रहे थे ।

उनमें से एक बोला-एक समस्या है।

फिर मैंने पूछा –बताईये क्या समस्या है ।

वह फिर बोला कि हमे बिल्डिंग की हाईट तो पता है ।

मैने बात काटते हुए कहा- हमारी सर्वेक्षण टीम द्वारा सर्वे करने के बाद जो हाईट आयेगी, वही हम आपको देंगे ।

फिर आगन्तुक बोला –बात दरअसल ये है कि हमारी बिल्डिंग की हाईट जो भी आये आप उसे ग्राउन्ड हाइट से 30 मीटर तक का ही प्रमाण पत्र देंगें ।

फिर मैंने पूछा-ग्रउन्ड से सही हाईट कितनी है । जवाब आया-36 मीटर है ।

मैंने बोला- तब 30 मीटर कैसे हो सकता है ।

एक ने बोला- कोई और तरीका हो बताइये मैंने बोला- कोई तरीका नही है, ऊपर 6 मीटर तुड़वा दीजिये ।

नही मेरा मतलब – कोई और तरीका हो, जिससे मुझे प्रमाण पत्र मिल जाये, मेरा काम भी हो जाये ।

मैने बोला- यहाँ दूसरे तरीके से कार्य नही होता, आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं ।

उनमें से एक बोला –हमें तो एन0ओ0सी0 अपने अनुरुप लेना है, आपके आफिस के अलाँवा हमारे कई दरवाजे है, किसी न किसी से काम होगा ही।

मैंने बोला – आप तो धीरु भाई अम्बानी के डायलाग बोल रहे है "कोई न कोई दरवाजा खुलेगा ही"

सभी आगन्तुक-शांतचित भाव से मुझे देखने लगे ।" कुछ देर शांत रहने के बाद"

उनमें से एक बोला- आपने हवाई जहाज (एअरोप्लेन) से बादलों के ऊपर सफर का आनन्द लिया है ।

मैं सोच में पड़ गया – कौन सा, मैं फ्रिक्वेन्टली एरोप्लेन का सफर करता हू, उस समय तक सिर्फ एक बार एरोप्लेन का सफर किया था, वह भी जिसमें बीच में जाल से बाँधकर सामान रखा था, किनारों की जगह में धुस कर हम लोग बैठे थे, वह एक सामान ढोने वाली प्लेन थी । फिर भी मैंने हेकड़ी से बोल दिया – हाँ किया है ।

आगन्तुक बोला – कितना असीम आनन्द मिलता है, जब बादलों के ऊपर होते और पता नही क्या-क्या बताता चला गया, "मैंने अपने ख्यालों में जरुर एक बार बादलों का क्या रहस्य है इसका पता लगाना पड़ेगा "।

उनमे तीसरा आगन्तुक बोला –"प्रदीप तुम मुझे पहचानते नही हों, मैं दिलीप .....,मैं सोच में पड़ गया"।

"अरे हम लोग देवरिया गर्वनमेंट इण्टर कालेज में पढ़ते थे"।

अपने आप को कालेज के मित्र के रुप में परिचय करा रहा था, मैंने भी उसे पहचान लिया , फिर मुझसे अनौपचारिक बात होने लगी ।

मैने उन सभी से चाय पीने का आग्रह किया-सभी ने कहा जरुर पीयेगें ।

मैंने अपने यहाँ कार्यरत अर्दली को चाय लाने को बोल दिया । मैंने उसे देखकर पूछा कि लखनऊ में कहाँ रहते हो ।" हजरतगंज में रहते हैं, कभी आओ .....मेरे घर"।

सन् 1984 की बात है। मैं गर्वनमेन्ट इण्टर कालेज, देवरिया में ग्यारहवीं में था । तभी दिलीप से मेरा पहला परिचय हुआ, कारवईन से लैस पुलिस के साथ हमारी कक्षा में प्रवेश करता था। उसे देखकर हम सब लोग खड़े हो गये शायद कोई अधिकारी आया हो, पीछे से हमारे क्लास टीचर आये,"यह आप लोगो का सहपाठी है, आज से इस क्लास में पढ़ेगा"।

क्लास टीचर मेरी तरफ इशारा करते हुए बोले-"यह तुम्हारे बगल में बैठेगा ।" मैने ध्यान से देखा-इतना लम्बा,चौड़ा एंव मोटा, कद-काठी से कहीं से भी स्टूडेन्ट नजर नही आ रहा था, ऊपर से सूट और टाई पहनकर ..... हमारे सरकारी कालेज में आ गया।

उसने बताया कि वह इस जिले के अपर जिलाधिकारी का सम्बन्धी है ।

उससे मित्रता होने से क्लास में मेरा रोब बढ़ गया। लेकिन पढ़ाई-लिखाई के मामले में पूरी तरह से फिसड्डी था। कुछ भी नही जानता था ।

देवरिया शहर छोटा सा है । कालेज घर जाते समय रास्ते में ही अपर, उप, जिलाधिकारियों के दो तीन बँगले पड़ते हैं। तब बँगलों में कभी अंदर तो गया नही था, बँगले के चारों तरफ ऊँची चारदीवारी थी । चार दीवारी के अंदर तरह-तरह के फलदार पेड़, आम, जामुन अमरुद, बेल, खिरनी एंव बेर आदि के बहुत सारे पेड़ थे । पढ़ाई के समय उन अमरुद और जामुन पर हम अपना अधिकार समझते थे, ऊँची चारदीवारी कभी रुकावट नही बनी ।

यद्यपि उसकी देखभाल करने वाला माली कभी रोकता था, कभी नहीं भी रोकता था। दिलीप से मित्रता होने पर चारदीवारी लाँघने की आवश्यकता नही पड़ी । शान से जाते थे, कुछ भी तोड़ लेते थे।

इसी बीच हमारे कार्यालय का अर्दली चाय लेकर आ गया । इस दौरान सभी समझ गये थे उनका कार्य यहाँ नही होने वाला है । चाय की प्यालियाँ एक-एक करके सभी के सामने रख दी गयी । तीनों ने चाय को घूरा .....। सीधे आगन्तुकों के सामने प्रस्तुत कर दिया था । वैसे भी कार्यालय द्वारा 6 कप का सेट प्रदान किया गया था । हमारे अर्दली ने किफायत बरतते हुए उसमे से दो कप निकाला था, दो पुराने कप प्रयोग कर रहा था। तीनों ने एक साथ चाय पीने से मना कर दिया, शायद उनको चाय का प्रजेन्टेशन अच्छा नही लगा। .....,इसलिए मैंने ज्यादा जोर नही दिया..... और मैंने अपनी चाय पी ली ।

शिष्टाचार वश उन सभी आगन्तुकों को अपने कार्यालय के गेट तक छोड़ने चला गया, क्योकि उसमें एक हमारा मित्र था । गेट के बाहर एक लैंड रोवर, एक फारचूनर खड़ी थी। उनके बैठने के उपरान्त, मैने नमस्कार किया अपने कक्ष में वापस आकर बैठ गया।

फिर भी मेरे मन मे एक आशंका बनी रही कि बादलों के ऊपर का रहस्य क्या हैं। जब बात मेरे मन में पैदा हुई थी उस समय हम प्लेन के इनटाईटल्ड नही थे । अपने पैसे से हवाई सफर नहीं कर सकते थे।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्लेन से एल0टी0सी0 गया भी तो कोई बादल दिखा नहीं था और एक दो बार सरकारी यात्रा पर गया, तब भी बादल से ऊपर के रहस्य का पता नही चला ।

एक दिन अचानक, मेरे पास एक आमंत्रण पत्र आया । उस व्यक्ति ने मेरी दिलीप से बात कराई, बताया-लखनऊ के ताज होटल में कम्पनी का एनुअल फंक्शन है और मुझे हिदायत दी तुम जरुर आना, साथ में भाभी जी को लेकर जरुर आना ।

मैंने उससे हामी तो भर ली उस समय तक मेरे पास सिर्फ स्कूटर था । दिसम्बर के सर्द में ताज होटल में जाना बहुत मुश्किल था । अगर ताज के बाहर स्कूटर खड़ा करके अंदर गया । ट्रैफिक पुलिस वाले स्कूटर उठा ले जायेंगे और फिर मैंने उसके फंक्शन में जाने का विचार त्याग दिया ।

दो तीन दिन बाद मेरे मित्र दलीप का फोन आया "तुम तो फंक्शन में नही आये थे। तुम्हे पता नहीं होगा, इसमे सिर्फ लिमिटेड़ एंव इम्पारटेन्ट लोगों को ही इनवाइट किया था । तुम तो पूरे चिरकुट के चुरकुट ही रह गये।"

मैंने कहाँ -"यार.... गुस्सा मत करो, मेरे पास गाड़ी नहीं थी, इसलिए नहीं आया।" सीधे सपाट शब्दों में बोल दिया ।

"ये पहले बताते-हम एक गाड़ी भी भेज देते।"

मैंने कहाँ-"नहीं यार...., तुम्हारी पार्टी में, तुम्हारी गाड़ी से....,यह ठीक नहीं लगता ।"

इतनी बहस होने के बाद मेरे मन में आत्मग्लानि आना तो स्वाभाविक ही है। उसके बारे में सोचने लगा, इंटर पूरा होने के बाद मुझे बताया था कि वह इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने मंगलौर जा रहा है। मैने बी0एस0सी0 करने के लिये गोरखपुर विश्वविद्यालय में दाखिला ले लिया । उस दौरान जब मैं एम0एस0सी0 कर रहा था, मेरी उससे मुलाकात गोलघर में हुई । तो उस समय भी एक शानदार गाड़ी से उतर रहा था, मैंने उसे देख लिया और इगनोर कर रहा था ।

तभी मेरे तरफ देखकर बोला-"अरे.....प्रदीप, यहाँ कहाँ?"

"....ऐसे ही घूम रहा हूँ।"

बात करने पर पता चला कि वहा खाना-खाने के लिए आया था। मुझसे आग्रह किया "चलो तुम भी खा लो,"

मैं आनाकानी करने लगा । लेकिन उसके आग्रह पर साथ चला गया । वहाँ मोती महल में शानदार ढ़ंग से खाने का आर्डर किया । जब तक खाना हमारे टेबल पर आता बातों का सिलसिला चल रहा था ।

बातों-बातों में बताया कि वह एक हाऊसिंग डेवलपमेंट सोसाईटी का पूरे उत्तरप्रदेश का निदेशक है। मैंने पूछा-"तुम तो मंगलौर में इंजीनिरिंग पढ़ने गये थे" फिर बोला-"इंजीनियरिंग की पढ़ाई बहुत कठिन थी, इसलिए दो साल बाद ही में छोड़ दिया । अच्छा , तुम बताओ तुम क्या कर रहे हो" मैंने बताया कि मैं गोरखपुर विश्वविद्यालय से एम0एस0सी0 कर रहा हूँ। "तुम चाहो तो मै अपने यहाँ काम दिला सकता हूँ ।" मैने पूछा वेतन कितना मिलेगा "कितना वेतन चाहिए," मैने कहाँ- दस हजार दिला देना ।" उसने कहा दस हजार ज्यादा है। चार से पाँच हजार दिला दूँगा । साथ में जो काम करोगे कमीशन अलग से मिलेगा ।

मैने कहा-"अभी रहने दो एम0एस0सी0 पूरा होने के बाद बतायेंगे" उसके बाद मेरी उससे बहुत ही कम मुलाकात होती थी । इस बीच बादलों के ऊपर का रहस्य गहराता गया । आखिर बादलों के ऊपर क्या होता है इसका पता लगाने के लिए अपने निदेशक महोदय के पास गया । वह आमतौर पर कई यात्रायें फ्लाइट से ही करते थे । मैंने उनसे पूछा-"सर फ्लाइट से उड़ान भरने पर बादलों के ऊपर क्या होता है?" उन्होने बताया कि बादलो के ऊपर क्या होता है?" उन्होने बताया कि बादलों के ऊपर खुला आसमान होता है। फिर भी उनके अनुभव के बारे में जान नही पाया ।

कई दिनों के बाद एक दिन अचानक सहारा माल में मेरी मुलाकात दिलीप से हो गयी । उसने बड़ी गर्म जोशी से मुझसे हाथ मिलाया वैसे उसके साथ कई लोग थे । चलो ऊपर वाले तल पर कोल्ड कॉफी पीते है । मैं उसके साथ-साथ इस्कलेटर से ऊपर चला गया, मैंने उससे पूछा-तुम्हारा एन0ओ0सी0 वाला काम हो गया। "हाँ यार....जो आब्जेकशन किया था उसने हटा दिया । "फिर मैंने पूछा-उस समय तुमने हमसे एक सवाल पूछा था कि फ्लाइट का सफर किया हूँ । वह भी लखनऊ से ऊपर से नीचे देखने पर सिर्फ काले रगं के गुब्बारे ही दिखते है । तब उसने बताया कि जब हम इंटरनेशनल फ्लाइट में जाते है हमें बहुत सारे अनुभव मिलते है ।

घरेलु उड़ान की तुलना में अन्तर्राष्ट्रीय उड़ान जमीन तल से 5000-8000 मीटर की ऊँचाई पर उड़ती है । कई बार ऐसा मौका मिलता है सफेद दूधिया बादल से ऊपर उड़ान भर रहे होते है जिस पर उड़ती सूरज की हजारों किरणें टकराकर बादलों की सफेदी को कई गुना बढ़ा देती है । ऐसा महसूस होता है कि धरती से ऊपर स्वर्ग में विचरण कर रहे हैं, वह एक अंतहीन अनुभव होता है । मैं उसके अनुभव को भाव-विभोर होकर सुनता रहा ।

जो प्राप्त है-पर्याप्त है

जिसका मन मस्त है

उसके पास समस्त है

उचित –अनुचित

अमित कुमार वर्मा, सहायक

किसी भी कार्य को करने में दो विचार धाराएं कार्य करती हैं । एक का सम्बन्ध है जर्मनी के तानाशाह हिटलर से, जो यह कहा करता था कि इस पृथ्वी पर सही और गलत का एकमात्र निर्णायक है – सफलता । तात्पर्य स्पष्ट है सफलता प्राप्त होनी चाहिए, साधन कोई भी और कैसा भी हो । दूसरी विचार धारा का संबंध महात्मा गांधी से है, जिनका कहना था कि पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पवित्र साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए । विश्व इन दोनों महान व्यक्तियों में किसका सम्मान करता है, इस प्रश्न का उत्तर ही यह स्थापित कर देता है कि जो सही या उचित है वह मान्य भी है और शाश्वत भी । यदि हम सुकरात के जीवन का अध्ययन करें तो हमें अनुभव होगा कि यदि किसी दास को भी इस प्रकार जीवन व्यतीत करने को विवश किया जाए, तो वह भी भाग जाएगा । दार्शनिक सुकरात ने जीवन से पलायन करने के लिए मृत्यु का वरण नहीं किया था, बल्कि गलत काम करने की अपेक्षा उसने मृत्यु का आलिंगन करना अधिक उचित समझा था ।

क्या सही है, क्या गलत है, इस संबंध मे विवाद हो सकता है, विशेषकर आधुनिक वैज्ञानिक युग में कुछ कार्यों का औचित्य-अनौचित्य देश, काल एवं व्यक्ति की मान्यताओं पर निर्भर होता है, परन्तु कुछ बातें एवं मान्यताएं शाश्वत होती हैं । सुकरात की प्रतिबद्धता उन्हीं के प्रति थी । इसी का लक्ष्य करके अब्राहम लिंकन ने कहा है कि हमको विश्वास होना चाहिए कि औचित्य वास्तविक शक्ति का हेतु बनता है । इसी विश्वास के सहारे हमें अन्त तक अपना कर्तव्य पालन करते रहना चाहिए । स्वामी विवेकानन्द जीवन और जगत में होने वाली विविधताओं में सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे । वह कहते थे कि विज्ञान और आध्यात्म के मध्य संगति स्थापित करो । विभिन्न सिद्धान्तों, मतवादों पंथों, मजहबों, गिरिजाघरों, मठों, मन्दिरों आदि की बातों की चिन्ता मत करो, क्योकिं प्रत्येक मानव में निहित सारतत्व की तुलना में वाह्य आचार संबंधी बातों का महत्व बहुत कम है । मानव में सारतत्व अथवा आध्यात्म का तत्व जितना ही विकसित किया जायेगा मानव उतना ही अधिक शक्तिशाली बनेगा । सच्चा मानव वही है जो आन्तरिक रूप से शक्तिशाली होता है । पहले अपने ऊपर विश्वास करों । मुठ्ठी भर आत्म-विश्वासी, शक्तिशाली व्यक्ति विश्व का नव-निर्माण कर सकते है । आपको भी उन्हीं भाग्यशाली एवं शक्तिशाली व्यक्तियों में अपनी गिनती करानी है । विवेकानन्द का कहना था कि पारलौकिक ज्ञान एवं प्रेम तभी सार्थक होते है, जब हम यथार्थ से इस लोक से जुड़े रहें और हताश हुए व्यक्तियों के प्रति दया एवं करूणा की अनुभूति करते रहें ।

जीवन के मूल्यों का जीवन के वास्तविक स्वरूप का दर्शन अध्यात्म के क्षेत्र में कम जीवन की वास्तविकताओं में अधिक होता है । आवश्यक यह है कि हम आत्मविश्वासी एवं दृढ़निश्चयी बनें तथा अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा के साथ करने का अभ्यास करें, अध्यात्मिकता तब सार्थक होती है जब वह यथार्थ का पोषण करती है । निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि समस्त चिंतन एवं सार्थक अनुभूतियों का सार यह है कि हम अपने को इस योग्य बनाने का प्रयत्न करें हम उन अहितकर एवं पापमयी शक्तियों का सामना कर सकें, जो समाज में अंधकार

फैलाकर अंधकार का लाभ उठाना चाहती है । दूसरे शब्दों में हम सत्य के मार्ग पर अडिग रहें और अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करें तो हम समाज में फैली बुराईयों एवं कुरीतियों से लड़ सकते है ।

कम लोग सुविधामय मार्ग पर चलने के अभ्यस्त होते हैं । हम उचित के अनुसरण के अनुगमन का संकल्प लेकर उसी पर चलते हैं । सुविधाएँ उचित के प्रतिकूल पड़ने पर बाधाएँ प्रतीत होने लगती है । नकल न करने का संकल्प करके परीक्षा देने वाले को नकल की सुविधाएँ काटने को दौड़ती हैं । जो व्यक्ति नियम विरूद्ध कार्य नहीं करना चाहते हैं, उनको बड़े से बड़ा प्रलोभन भी नियम विरूद्ध कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकता है । महात्मा गॉधी अहिंसात्मक स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति प्रतिबद्ध थे । वे प्राय: कहा करते थे – मुझे हिंसा द्वारा प्राप्त स्वराज्य स्वीकार नहीं होगा । उन्होनें कभी भी मार्ग नहीं बदला और अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही हमें आजादी दिलाई । कहने का तात्पर्य यह है कि वही कार्य उचित है जिसको करने का आपने मन बना लिया है तथा आपकी आत्मा उसको उचित मानती है । इस संबंध में एक कहानी का जिक्र करना आवश्यक है । एक परीक्षा में एक परीक्षार्थी जिसको 104 डिग्री बुखार था, को एक अलग कमरे में अकेले बैठा दिया गया । कक्ष निरिक्षक ने जानना चाहा – क्या तुमको सहायतार्थ कोई पुस्तक चाहिए, उस परीक्षार्थी ने सहज भाव से मना करते हुए कह दिया कि थोड़े से अंकों के पीछे मैं अपना ईमान खराब नहीं करूँगा । परन्तु दुर्भाग्यवश यह कहने वाले भी काफी व्यक्ति मिल जाएँगे कि वह बालक मूर्ख था, द्वार पर आई हुई सुविधा को मना करके उसने भगवान के प्रति अपराध किया । मार्क ट्वेन ने कहा है कि हमेशा सही काम करो, इससे कुछ लोगों को यह सोचकर संतोष होगा कि अभी सत्य एवं ईमान बने हुए हैं तथा कुछ लोगों को यह सोचकर आश्चर्य होगा कि अभी भी ऐसे मूर्ख मौजूद हैं जो ईमानदारी के नाम पर अपना नुकसान करके परेशान नहीं होते हैं ।

अनुचित का त्याग एवं उचित को ग्रहण करने वाला व्यक्ति लाभ-हानि पर विचार नहीं करता है । वह तो उचित कार्य इसलिए करता है, क्योंकि उसने ऐसा ही करना सीखा है तथा इसी में उसे प्रसन्नता एवं संतुष्टि मिलती है एवं उसकी आत्मा भी इसकी गवाही देती है ।

इस कोटि का व्यक्ति शायद ही नुकसान-फायदे की बात करता है । एक पुरानी कहावत है जिस व्यक्ति को स्वर्ग की चिन्ता नहीं होती वह तो स्वर्ग में ही होता है । उचित के प्रति सजग व्यक्ति असत्य को सुनता है और उसका वध कर देता है । वह उस मार्ग पर चलता है जिस पर परमेश्वर चला है वह उसी मार्ग पर परमेश्वर का हाथ पकड़कर चलता है तो उससे अनुचित कार्य हो ही नहीं सकता ।

यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी एवं सत्यता से करे तो शायद एक स्वच्छ एवं शुद्ध समाज का निर्माण हो सकता है । हम दूसरों से अपेक्षा करने की जगह स्वयं को उचित एवं सत्य के मार्ग पर रखें तो दूसरे तो स्वयं उसका अनुसरण करने लगेंगे । एक बहुत पुरानी और प्रचलित कहावत है –

आप भला तो जग भला ।

रहे मेरे भवन में रौशनी हिन्दी चिरागों की,
कि जिसकी लौ पे जलकर
खाक हो विस्मिल सा परवाना ।

शहीद राम प्रसाद विसमिल

अनुभूति

राजेश कुमार, अधीक्षण सर्वेक्षक

ईश्वर है सब जगह सदा, कण-कण में ब्रम्हा समाया है,
शाश्वत है वह अविनाशी, मंदिर उसका हर काया है ।
फिर क्यों बातें होती हैं छुआछूत अपमान की,
श्रेष्ठतर मेरी जीवन-शैली, बातें निराभिमान की ।

ईश्वर में भी भेद किया, वह यहाँ है ज्यादा वहाँ है कम,
परमपिता परमेश्वर के अस्तित्व में भी डाला है भ्रम ।
यह शुभ है वह अशुभ समय, तेरी यह सोच निराली है,
पाखण्डों में पड़कर तेरा मस्तिष्क तर्क से खाली है ।

राम सीता परिणय की तय की गुरू वशिष्ठ ने बेला,
फिर भी जगदजननी सीता ने घोर कष्ट था झेला ।
महारानी होकर लव-कुश को जनम दिया था बन में,
जीवन के अंत समय तक झेला अपमानों का मेला ।

शुभ-अशुभ समय नही, न व्यक्ति न समाज है,
सुकर्म से सॅवरता रहा कल और आज है ।
जैसा कर्म वैसा फल, यही कटु सत्य है,
शुभ-अशुभ की सोच ही भ्रामक व असत्य है ।

परिवार का प्यार

संकलित

आज जब मैं अपने पूरे घर की साफ-सफाई कर चुकी थी, तो अचानक मेरे भाई ने मुझे फोन किया और चहकते हुए कहा, "दीदी मैं और मेरी पत्नी आपसे आज अभी मिलने आ रहे हैं।" मैं उनके नाश्ते के लिए कुछ तैयार करने के लिए अपनी रसोई में गयी, लेकिन मुझे उनकी आवभगत के लिए रसोई में कुछ भी नहीं मिला।

बहुत सोच-विचार और खोज के बाद, मेरे हाथ केवल 2 संतरे लगे जो उनके सामने रख सकती थी। संख्या में कम न लगे इसलिए मैंने उनका तुरंत दो गिलास ठंडा जूस बना लिया। जब मेरा भाई और उसकी पत्नी पहुंचे तो मैं उसकी सास को उनके साथ देखकर चौंक गयी, माँजी पहली बार हमसे मिलने आई थीं इसलिए मैंने उनको और भाभी को जूस के दो गिलास परोसे, और मैंने अपने भाई के सामने यह कहते हुए एक ग्लास पानी रख दिया, 'मुझे पता है कि तुम्हें आज भी स्प्राइट पसंद है।'

अभी उसने स्प्राइट का एक घूंट ही पिया था और महसूस ही किया था कि यह पानी है। कि अचानक....उसकी सास ने कहा, "बेटा मैं भी स्प्राइट ही पीना चाहूंगी। बुरा न माने तो बेटा मुझे भी स्प्राइट ही दे दो "

यहाँ मैं फंस गई थी और शर्मिंदगी में अटक सी गयी थी लेकिन मेरे भाई ने उससे यह कहकर मुझे बचा लिया, ' माँ.....मैं आपके लिए रसोई में से एक साफ गिलास लेकर इसे अभी आधा- आधा कर लाता हूँ।' थोड़ी देर बाद हमें किचन में ग्लास टूटने की आवाज सुनाई दी। फिर वह लटका से मुंह लेकर वापस आया और अपनी सास से बोला, 'सॉरी... यह ग्लास मेरे हाथ से गिर गया और टूट गया लेकिन कोई बात नहीं माँ, मैं तुरन्त पड़ोस की दुकान आपके मेरे लिए अभी स्प्राइट ले आता हूँ '।

उसकी सास ने मना कर दिया और मुस्कुराते हुए कहा, "इसकी कोई आवश्यकता नहीं बेटा, आज शायद मेरी किस्मत में स्प्राइट थी ही नहीं।" आख़िरकार जब वे जा रहे थे तो मेरे भाई ने कुछ पैसे मेरे हाथ में रख दिए और कहा, "बिखरी स्प्राइट को रसोई से साफ करना मत भूलना दीदी वरना आपके हाथ की मिठास के कारण उसमें चींटियाँ आ जाएंगी।" और उसने मुझसे एक प्यारी सी मुस्कान के साथ विदा ली।

इस तरह मेरे भाई ने मेरी भावनाओं को समझा और मेरी कमी को छुपाया। यह परिवार का प्यार है जब आप किसी कठिन परिस्थिति में हों, तो उसका उपयोग दूसरों को उठाने के लिए करें। किसी को नीचा दिखाने से आप कभी बेहतर नहीं हो सकते!

"आप अपने भाई-बहनों, दोस्तों, परिवार, सहकर्मियों आदि के साथ कठिन समय मे कैसा व्यवहार करते हैं ? क्या आप उस विकट समय मे उनकी शर्म को ढकते हैं या उन्हें और ज्यादा गड़बड़ कर देते हैं ? " यही है आज के चिंतन के लिये मेरा छोटा सा विचार"

भारतीय सामाजिक परिवेश में रामचरित मानस का महत्व

प्रमोद कुमार, कार्यालय अधीक्षक

राम चरित मानस भारतीय संस्कृति का ऐसा ग्रन्थ है जिसकी महत्ता बढती ही रही है कभी घटती नही है। भारतीय संस्कृति की रीति एवॅ नीति दोनो एक साथ इसमें देखी जा सकती हैं। श्री तुलसीदास जी ने रामचरित मानस के माध्यम से सामाजिक परम्पराओं का ताना बाना बुना हुआ है। समाज के विकृत रुप को देखकर उन्होनें उसके सुधार का उपाय भी सोच लिया था इसीलिए उन्होनें राम जैसे नायक का चरित्र खुलकर उभारा और समाज को राममय बनाने में कोई कमी नहीं की है। लोक संस्कृति के बृहत आयाम के सच्चे प्रतिनिधि के रुप में तुलसी दास ने रामचरित मानस के भारतीय समाज के तीव्र लोक संर्घष को स्वीकार किया है।

राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में यदि देखा जाय तो राम का निर्वासन देश को एक शक्ति केन्द्र मे बाँधने का एक मौका है। राम ने बालि का राज्य हड़पा नही बल्कि वहीं के लोगों को छोटे और बड़े पद्रों पर बैठा दिया इसी तरह से रावण के राज्य को उनके भाई विभीषण को सौंप दिया।

भाग्योदय सम्बंधी उल्लेख भी रामचरित मानस में दिखाई पड़ता है। आपके साथ जो होना है भाग्य आपको वहीं ले जायेगा।

तुलसी जसि भवितब्यता तैसी मिलई सहाइ ।

आपुनि आवई ताहि पहिं ताहि तहां लई जाइ ।।

बड़े भाग विधि बात बनाई। नयन अतिथि होइहईं दोउ भाई ।।

सामाजिक संदर्भ में रामचरित मानस की प्रसांगिकता कम नहीं है ।

फिरत अहेरे परऊं भुलाई । बड़े भाग देखेउ पद आई ।।

इस ग्रंन्थ के अध्यातमिक सामाजिक महत्तव में किसी प्रकार का विवाद नहीं है ।सत्संगति की महत्ता जो तुलसी दास ने अपने महाकाव्य में दिखाया है । शायद कोई भी कवि वहाँ तक नही पहुँच पाया है ।

सत संगत मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला ।।

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ।

राजनीति के संबंध में श्री तुलसीदास जी ने राजा के राज्य को कैसा होना चाहिए उसे दर्शाया है ।

दैविक भौतिक तापा ।रामराज काउहि नहिं व्यापा ।।

बैयरु ना कर काहू सन कोई ।राम प्रताप विसमता खोई ।।

मित्रता के संबंध में विभीषण जैसे दोस्त को हटाकर राम खुद रावण की शक्ति के सामने आकर खड़े हो जाते है ।

आहत देख शक्ति अति घोरा । प्रनतारक भंगन पन मोरा ।।

तुरत विभीषण पाछे मेला । सम्मुख राम रहेउ सो सेला ।।

श्री तुलसीदास जी ने उपने महाकाव्य में दुश्मनों के आदर सत्कार में कोई कमी नहीं की जैसे राम विभीषण से लंकेश कहकर रावण की कुशलक्षेम पूछते हैं एंव विभीषण को अपने पास बैठाकर उनका हाल-चाल भी पूछते है ।

क्या आज यह प्रासंगिक नही है कि आसुरी शक्ति से संम्पन्न आतंकवाद की समाप्ति के लिए दुनिया की जनतांत्रिक ताकतें मेलजोल में आयें और संगठित होकर आतंकवाद जैसी आसुरी मानसिकताओं का दमन करें ।अन्त में सच तो यह है कि रामचरित मानस से भारतीय आधुनिक समाज एवं विश्व बहुत कुछ सीख सकता है और इस तरह से भारत एक बार फिर विश्व गुरु बन सकता है ।

सीनियर सिटीजन : खत्म होने जा रहा एक युग

संकलित

आने वाले 10/15 साल में एक पीढ़ी संसार छोड़ कर जाने वाली है...जो सीनियर सिटीजन है।जिनकी उम्र इस समय लगभग 60 -75 साल की है । इस पीढ़ी के लोग बिलकुल अलग ही हैं । रात को जल्दी सोने वाले, सुबह जल्दी जागने वाले, भोर में घूमने निकलने वाले।

आँगन और पौधों को पानी देने वाले, देवपूजा के लिए फूल तोड़ने वाले, पूजा अर्चना करने वाले, प्रतिदिन मंदिर जाने वाले । रास्ते में मिलने वालों से बात करने वाले, उनका सुख दुःख पूछने वाले, दोनो हाथ जोड़ कर प्रणाम करने वाले, पूजा किये बगैर अन्नग्रहण न करने वाले । उनका अजीब सा संसार...तीज त्यौहार, मेहमान शिष्टाचार, अन्न, धान्य, सब्जी, भाजी की चिंता तीर्थयात्रा, रीति रिवाज, सनातन धर्म के इर्द गिर्द घूमने वाले । पुराने फोन पर ही मोहित, फोन नंबर की डायरियाँ मेन्टेन करने वाले, रॉन्ग नम्बर से भी बात कर लेने वाले, समाचार पत्र को दिन भर में दो-तीन बार पढ़ने वाले ।

हमेशा एकादशी याद रखने वाले, अमावस्या और पूर्णमासी याद रखने वाले लोग, भगवान पर प्रचंड विश्वास रखने वाले, समाज का डर पालने वाले, पुरानी चप्पल, बनियान, चश्मे वाले । गर्मियों में अचार पापड़ बनाने वाले, घर का कुटा हुआ मसाला इस्तेमाल करने वाले और हमेशा देशी टमाटर, बैंगन, मेथी, साग भाजी ढूंढने वाले । नज़र उतारने वाले, क्या आप जानते हैं कि ये सभी लोग धीरे धीरे, हमारा साथ छोड़ के जा रहे हैं ।

क्या आपके घर में भी ऐसा कोई है? यदि हाँ, तो उनका बेहद ख्याल रखें।

अन्यथा एक महत्वपूर्ण सीख, उनके साथ ही चली जायेगी... वो है, संतोषी जीवन, सादगीपूर्ण जीवन, प्रेरणा देने वाला जीवन, मिलावट और बनावट रहित जीवन, धर्म सम्मत मार्ग पर चलने वाला जीवन और सबकी फिक्र करने वाला आत्मीय जीवन । आपके परिवार में जो भी बड़े हों, उनको मान सम्मान और अपनापन, समय तथा प्यार दीजिये , और हो सके तो उनके कुछ पद चिन्हो पर चलने की कोशिश करे । यह मानव इतिहास की आखिरी पीढ़ी है , जिसने अपने बड़ों की सुनी और अब अपने छोटों की भी सुन रहे हैं । **यही है वो सीनियर सिटीजन**

संस्कार ही
अपराध रोक सकते हैं
सरकार नहीं !!

संस्कृत में धन को द्रव्य कहा जाता है अर्थात बहने वाला । यदि वह स्थिर रहा तो रूके हुए पानी की तरह उसमें बदबू आने लगेगी

विनोबा भावे

भ्रष्टाचार का स्वरूप, दुष्प्रभाव एवं इसकी रोकथाम

देवेन्द्र कुमार सिंह, सहायक

भारतवर्ष एक बहुत ही प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता वाला देश है । विश्व की सबसे प्राचीनतम सभ्यता वाला देश होने के बावजूद आज हमारा देश भ्रष्टाचार जैसी गंभीर समस्या से जूझ रहा है, जो कि हमारे देश के गौरवपूर्ण इतिहास को धूमिल करता है । हमारे देश में भ्रष्टाचार की समस्या एक कैंसर जैसी लाईलाज बीमारी का स्वरूप लेती जा रही है । इस निबन्ध में भ्रष्टाचार के स्वरूप एवं दुष्प्रभाव एवं इसकी रोकथाम के उपाय पर प्रकाश डाला जा रहा है ।

वर्तमान में आज हमारा देश बहुत ही तीव्र गति से आगे बढ़ रहा हे एवं देश की अर्थव्यवस्था में दिन प्रति दिन वृद्धि हो रही है, जिसके साथ-साथ हमारे देश विश्व में भ्रष्टाचार के तरीकों में भी बदलाव आया है । पूरे विश्व में जो भ्रष्टाचार का स्वरूप है उसमें सबसे बड़ा स्वरूप है रिश्वतखोरी, जो कि हर कदम पर आम नागरिकों के लिए समस्या बना हुआ है । भ्रष्टाचार के स्वरूपों में झूठी गवाही देना, प्रशासनिक स्तर पर अपने पद का दुरूपयोग करना, आनलाईन तरीकों से किसी के बैंक खाते से पैसे निकालना,किसी भर्ती प्रक्रिया में गलत तरीके से सफल अभ्यर्थी को असफल करते हुए अयोग्य अभ्यर्थी की नियुक्ति करना, सरकारी सामानों की चोरी करना, सामाजिक रूप से कमजोर वर्गो का उत्पीड़न करना, शादी करने हेतु दहेज की मॉग करना इत्यादि है ।

आज हमारा विश्व एवं समाज सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार रूपी दानव से व्यथित है, जिसका प्रभाव प्रत्येक वर्ग के लोगो पर बहुत ही गंभीर रूप से पड़ता है । भ्रष्टाचार के कारण आज अमीर व्यक्ति और अमीर एवं गरीब व्यक्ति और गरीब होता जा रहा है । भ्रष्टाचार के कारण ही आज हमारी अर्थव्यवस्था बहुत ही धीमी गति से अग्रसर है । भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 श्री राजीव गॉधी जी ने आज से 35 वर्षो पहले ही अपने भाषण में भ्रष्टाचार का जिक्र करते हुए कहा था कि यदि केन्द्र द्वारा किसी किसान या गरीब को एक रूपया प्रदान किया जाता है तो उन तक पहुॅचते-पहुॅचते वह 10 पैसे हो जाता है जोकि पूर्णतया सही है । यदि केन्द्र या राज्य सरकारों द्वारा चलाये जा रहे अभियानों के तहत पूर्ण रूप से जो सहयोग दिया जाता है, वह गरीब मजदूरों एवं किसानों तक पूरी ईमानदारी से पहुॅचे तो उस स्थिति में देश प्रगति के रास्ते पर दौड़ने लगेगा ।

आज भ्रष्टाचार के कारण हर किसी के मन मे असंतोष एवं हीन भावना आती जा रही है, जिसके कारण बहुत से लोगों द्वारा आत्महत्या, चोरी डकैती इत्यादि अपराध किये जा रहे है । भ्रष्टाचार के कारण योग्य लोगो की जगह अयोग्य लोगो को बड़े-बड़े पदों पर आसीन कर दिया जाता है जिसके कारण उनके निर्णय लेने की अक्षमता के कारण बहुत से वर्गो एवं देश को आर्थिक एवं सामाजिक क्षति से गुजरना पड़ता है । भ्रष्टाचार के कारण ही आज एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की सहायता करने से कतराता है । भ्रष्टाचार के कारण किसी भी देश की साख अन्य देशों की तुलना में कम होती है, जिसके कारण देश को गंभीर आर्थिक क्षति से गुजरना पड़ता है ।

आज पूरे विश्व में भ्रष्टाचार समाप्त करने हेतु नये-नये कदम उठाये जा रहे है, जिसका लाभ भी आशाजनक प्राप्त हो रहा है । भ्रष्टाचार की रोकथाम हेतु किसी देश की सरकार को कड़े कानून बनाने चाहिए एवं न्याय व्यवस्था में व्यापक बदलाव करते हुए उनको त्वरित गति से अपराधियों को दण्ड देने का प्रावधान बनाना चाहिए । वर्तमान में आज इलेक्ट्रानिक माध्यम जैसे इंटरनेट, आनलाईन फार्म भरना या ज्यादा से ज्यादा काम इलेक्ट्रानिक माध्यम से किये जाने चाहिए या सरकार को सभी कार्य आनलाईन माध्यम से कराने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, जिससे घूसखोरी मे कमी आयेगी एवं पारदर्शिता बढ़ेगी । सरकार को भष्टाचार से होने वाले नुकसान एवं भ्रष्टाचारी को दंडित किये जाने से उसके परिवार एवं स्वयं उस पर होने वाले प्रभाव का प्रचार-प्रसार करना चाहिए । भ्रष्टाचार से होने वाले दुष्प्रभावों को देश के कोने-कोने तक पहुँचाना चाहिए जैसे नुक्कड़ नाटक करके जागृत करना, दीवारों पर प्रचार करके स्वयंसेवी संस्थाओं को घर-घर जाकर प्रचार करने से लोगो की सोच में बदलाव आयेगा तथा भ्रष्टाचार में कमी आयेगी । देश की नागरिकों को अपने अधिकारों के बारे में जागृत करना एवं उनको अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करके भ्रष्टाचार को रोका जा सकता है ।

संविधान के अनुच्छेद 343 – संघ की राजभाषा

1) संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंको का रूप भारतीय अंको का अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रयोग होगा ।

2) खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहल प्रयोग किया जा रहा था : परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा ।

3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात् विधि द्वारा
a) अंग्रेजी भाषा का, या
b) अंको के देवनागरी रूप का
ऐसे प्रयोजनों के लिए उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं ।

अनुच्छेद 351- हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे ।

मेरी भी सुनों

मेजर विकास मलिक, उप अधीक्षक सर्वेक्षक

हिंदी को कहे राजभाषा, पर सपने में रोज इंगलिश ही आता ।

वैसे तो कहे जय हिन्द और भारत माता, पर भारत में कोई न रहना चाहता ।

एक विदेशी हिंदी सीखकर हिंदी का सम्मान कर जाता है और इसी देश में जो बोले हिंदी वो अपमानित सा क्यों हो जाता है ।

समस्या यह नहीं कि हम अंग्रेजी क्यो बोलते है ,

समस्या यह है कि हम हिंदी क्यों भूलते है ।

माना संस्कृति की हर पेड़ पर लगी हवा, हम इन हवाओं को रोक नहीं सकते

परन्तु इन हवाओं में खोकर तुम अपनी जड़ों को भी तो नहीं भूल सकते ।

चाइना जापना जैसे देश अपनी मातृभाषा में तरक्की कर जाते है और हम चार लोगों में जो बोले हिंदी तो अपमानित से हो जाते हैं ।

अंधकारयुक्त भारत का आगाज हो गया है, देश का भविष्य शायद देश से नाराज हो गया है ।

अंग्रेजी एक भाषा ही तो है पर न जाने क्यूं, हर माता-पिता इसे सिखाने के पीछे परेशान सा हो जाता है ।

विदेशी अपनी भाषा पर खूब इतराते है और हम भगवान से ज्यादा तो विदेशी भाषा के गुण गाते है ।

अंग्रेजी भाषा का ज्ञान हमें खजाना सा लगता है और अगर करनी पड़ी 100 तक हिंदी में गिनती तो हमें अपना दिमाग खुजलाना पड़ता है ।

हिंदी दिवस आते-आते हिंदी पर प्यार आ ही जाता है और फिर किसी पिछड़ी जाति की तरह हाशिए पर उसे खिसका दिया जाता है ।

मेरी समझ में मान-सम्मान न तो बताया जाता है और न जताया जाता है यह तो बस मन का है, मन से निभाया जाता है ।

कम से कम हिंदी का झूठा सम्मान तो मत करिए, अपने ही देश में रहकर विदेशी तो मत बनिए ।

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता |

- चाणक्य

प्रणाम का महत्व

संकलित

महाभारत का युद्ध चल रहा था - एक दिन दुर्योधन के व्यंग्य से आहत होकर "भीष्म पितामह" घोषणा कर देते हैं कि "मैं कल पांडवों का वध कर दूँगा" ।

उनकी घोषणा का पता चलते ही पांडवों के शिविर में बेचैनी बढ़ गई - भीष्म की क्षमताओं के बारे में सभी को पता था इसलिए सभी किसी अनिष्ट की आशंका से परेशान हो गए | तब श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा अभी मेरे साथ चलो ।

श्रीकृष्ण द्रौपदी को लेकर सीधे भीष्म पितामह के शिविर में पहुँच गए - शिविर के बाहर खड़े होकर उन्होंने द्रोपदी से कहा कि - अन्दर जाकर पितामह को प्रणाम करो । द्रौपदी ने अन्दर जाकर पितामह भीष्म को प्रणाम किया तो उन्होंने-

"अखंड सौभाग्यवती भव" का आशीर्वाद दे दिया , फिर उन्होंने द्रोपदी से पूछा कि !!

"देवी, तुम इतनी रात में अकेली यहाँ कैसे आई हो, क्या तुमको श्रीकृष्ण यहाँ लेकर आये है" ?

तब द्रोपदी ने कहा कि - "हां और वे कक्ष के बाहर खड़े हैं" तब भीष्म भी कक्ष के बाहर आ गए और दोनों ने एक दूसरे से प्रणाम किया -भीष्म ने कहा -"मेरे एक वचन को मेरे ही दूसरे वचन से काट देने का काम श्रीकृष्ण ही कर सकते है" ।

शिविर से वापस लौटते समय श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि - "तुम्हारे एक बार जाकर पितामह को प्रणाम करने से तुम्हारे पतियों को जीवनदान मिल गया है "-

"अगर तुम प्रतिदिन भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य, आदि को प्रणाम करती होती और दुर्योधन- दुःशासन, आदि की पत्नियां भी पांडवों को प्रणाम करती होंती, तो शायद इस युद्ध की नौबत ही न आती " -

.....तात्पर्य.....

वर्तमान में हमारे घरों में जो इतनी समस्याए हैं उनका भी मूल कारण यही है कि - "जाने अनजाने अक्सर घर के बड़ों की उपेक्षा हो जाती है " ।

" यदि घर के बच्चे और बहुएँ प्रतिदिन घर के सभी बड़ों को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद लें तो, शायद किसी भी घर में कभी कोई क्लेश न हो " ।

बड़ों के दिए आशीर्वाद कवच की तरह काम करते हैं उनको कोई "अस्त्र-शस्त्र" नहीं भेद सकता - "निवेदन है सभी इस संस्कृति को सुनिश्चित कर नियमबद्ध करें तो सभी घर स्वर्ग बन जाएंगे।"

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना,
यही तपस्या का स्वरूप है|
-संत तिरुवल्लुवर

रिश्ते

अर्जुन सिंह, अधीक्षण सर्वेक्षक

मनुष्य के जन्म लेते ही उसके रिश्ते बनना प्रारम्भ होते है पहला रिश्ता मॉ एवं पिता से शुरू करके परिवार के अन्य सदस्यों एवं उनसे जुड़े रिश्ते अपने आप ही जुड़ जाते है । दूसरा चरण तब शुरू होता है जब वह बड़ा होने लगता है जैसे साथ खेलने कूदने वालों से दोस्ती, साथ पढ़ने वालों के साथ सहपाठी, साथ कार्य करने वालों के साथ सहकर्मी और कोई व्यवसाय यदि करना प्रारम्भ करते है तो व्यवसायिक रिश्ता इत्यादि । तीसरा चरण उसके विवाह के बाद रिश्तों की सूची काफी लम्बी हो जाती है ।

रिश्तों के संबंध मे व्हाटसएप्प में आये दिन नये-नये विचार आते रहते है उनमें से जो विचार मुझे अच्छे लगे उन्हें संकलित कर आप सब पाठको के समक्ष प्रस्तुत है ।

मिट्टी का गीलापन जिस तरह पेड़ की जड़ों को पकड़कर रखता है ठीक उसी

तरह शब्दों का मीठापन मनुष्य के रिश्तो को पकड़कर रखता है ।

अगर रिश्ता निभाना है तो कुछ बातों को नजर अंदाज करना भी सीखे.....

हर बहस में जीतने की कोशिश करने वाले अक्सर रिश्ते हार जाते है.....

दुनिया के सारे लोग किसी न किसी के भरोसे पे जीतें है

हरदम यही प्रयास करें कि आप पर से किसी का भरोसा न टूटे ।

रिश्तों की गल्तियॉ उतना कमजोर नहीं करती, जितना की गलतफहमियॉ करती है ।

रिश्ते कभी भी बराबरी करने से नही पनपते क्योंकि,

उन्हे जिंदा रखने के लिए किसी को बड़ा और किसी को छोटा होना ही पड़ता है ।

नाराजगी भी एक खूबसूरत रिश्ता है जिससे होती है,

वह व्यक्ति दिल और दिमाग दोनो में रहता है ।

रिश्तों में उम्र से सम्मान जरूर मिलता है,

पर आदर तो केवल व्यवहार से ही मिलता है ।

अपनों से भी थोड़ा सोच समझ कर बोलना चाहिए,

क्योंकि वो भी इतनी जल्दी बातें नही मानते जितना जल्दी बुरा मान जाते हैं ।

रिश्तों में मन की बात कह देने से फैसले हो जाते हैं

और मन में रख लेने से ... फासले हो जाते है ।

रिश्तों में शुक्रिया अदा करना और माफी माँगना, दो गुण जिस व्यक्ति के पास है

वो सबके करीब और सबके लिए अजीज होता है

जो दिल मे है उसे कहने की हिम्मत रखिए

और जो दूसरो के दिल में है उसे समझने का हुनर रखिए

रिश्ते कभी नहीं टूटेंगे ।

विचारों की खूबसूरती कहीं से भी मिले चुरा लो

क्योंकि चेहरे की खूबसूरती तो उमर के साथ बदल जाती है,

मगर विचारों की खूबसूरती हमेश दिलों मे अमर रहती है ।

टीचर- इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए ?

गोलू- बर्ड फ्लू हो गया था मैम ।

टीचर- पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं ।

गोलू- इंसान समझा ही कहां आपने...रोज तो मुर्गा बना देती हो..!!

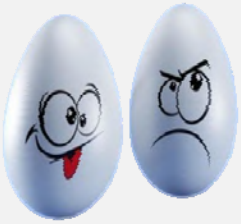

टीचर ने चिंटू से पूछा- अच्छा ये बताओ कि दुनिया में कितने देश हैं ?

चिंटू- अरे मैम आप भी ये कैसी बात कर रही हैं।

दुनिया में तो बस एक ही देश है, हमारा देश भारत।

बाकी तो सब विदेश हैं।

शशांक कुमार सिंह, सहायक

सार्स कोविड-19, सार्स प्रजाति का ही एक विषाणु है, जिसका सार्थक एवं सफल निदान अभी तक संभव नहीं हो पाया है। इसको कोविड-19 नाम देने का उद्देश्य यह था कि इस प्रजाति/घटक के पहले विषाणु की पहचान ब्रिटेन में 2019 में की गई थी। विश्व के सभी देशों में इसका विनाशकारी प्रभाव देखा गया और अभी तक व्याप्त है।

भारत भी इससे अछूता नहीं रहा, जब वर्ष 2020 के शुरूआती माह में सबसे पहले केरल राज्य में इस विषाणु की पुष्टि किसी मानवीय शरीर में की गई। समय के साथ इस महामारी ने सम्पूर्ण भारत के जन-मानस को प्रभावित किया, चाहे वह स्वास्थ्य के स्तर पर हो या मानसिक स्तर पर हो अथवा आर्थिक स्तर पर हो। इस महामारी की विभीषिका को इस तरह से भी समझा जा सकता है कि कितने परिवारों में उनका वंश बढाने वाला भी कोई नहीं बचा और जो परिवार इससे बच पाएं तो उनके जीविकोपार्जन का साधन तक नष्ट हो गया।

इस महामारी ने समाज के सभी वर्गों के प्रशासनिक, आर्थिक, नैतिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक पहलू पर गहरा प्रभाव छोड़ा । कोविड-19 ने सरकारी तन्त्र को स्वास्थ्य एवं सार्वजनिक सेवा की कसौटी पर भी परखा, आपसी रिश्तों को संकट के तराजू पर भी तौला साथ ही शहरी चकाचौंध की ओर पलायन कर रहे लोगों को गॉव से जुड़कर रहने की महत्ता भी समझाई। कुछ कड़वे पहलू के तौर पर जरूरी औषधियों, सैनेटाइजर, खाद्य एवं रसद की कालाबाजारी कर जल्द से जल्द अमीर बनने वाले की पोल भी खोली तो कुछ मीठे अहसास के रूप में उन लोगों से भी परिचित कराया जो जान की परवाह किए बिना गरीब, बेसहारा और संक्रमित लोगों की मदद करते रहे एवं स्वयं के धन को सामाजिक कार्यों में खर्च किया।

कोविड-19 महामारी ने मानवीय पहलू से जुड़े हर स्तम्भ को प्रभावित किया। शिक्षा का क्षेत्र भी इसमें शामिल है। सामाजिक दूरी के नियम के कारण बच्चे ऑनलाईन शिक्षा की ओर प्रेरित हुए जिससे शिक्षक-छात्र में शिक्षण की पारस्परिक क्रिया (इंटरेक्शन) प्रभावित हुई एवं बच्चों की बुद्धिलब्धि में कमी देखी गई। उत्तर भारत के हिंदी भाषी क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के लिए कार्य करने वाली संस्था ''प्रथम''के ताजा सर्वे में उन्होंने यह पाया कि कक्षा 1 से कक्षा 5 तक के बच्चे जो कोरोना महामारी से पहले जितनी बुद्धिलब्धि रखते थे उसमे काफी गिरावट आई है। सामान्य कहानी को ठीक तरह से पढ़ने का प्रतिशत 53% था जो कि कोरोना महामारी में घटकर 31% रह गया है। अर्थात यह महामारी बच्चों के मानसिक स्तर को काफी प्रभावित कर रही है। शिक्षक एवं विद्यार्थी का ऑफलाइन होने वाला प्रभावी संवाद ऑनलाईन में बिल्कुल नहीं हो पाता, जिस कारण बच्चे उतना नहीं सीख पा रहे हैं जितना उनकी क्षमता है।

आर्थिक स्तर की बात करें तो कोरोना महामारी में ज्यादातर नियोक्ताओं ने कर्मचारियों की छटनी की थी जिससे बहुत लोग बेरोजगार एवं आर्थिक स्तर पर तंग हालात के शिकार हुए। नैतिकता को छोड़कर परिवार एवं स्वयं के भरण पोषण के लिए अनैतिक कार्य भी किए। सामाजिक दूरी का अर्थ अधिकतर लोगों ने समाज से हर तरह की दूरी बनाने से समझा और समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होने की बजाय उससे विमुख हो गए। मानसिक तौर

पर लोग अब तक डरे हुए हैं कि पता नहीं कब सार्स कोविड विषाणु किसी नए रूप में अपना प्रसार पुन: बढ़ाएं और फिर हम किसी अपने को या स्वयं को खो दें। कोरोना की वजह से मानसिक इच्छा शक्ति के कमजोर होने से लोग डिप्रेशन का शिकार हो रहे हैं क्योंकि किसी को नौकरी खोने का डर है तो किसी को परिवार को खोने का डर सता रहा है।

सरकार ने इस महामारी के लिए बहुत सार्थक प्रयास किए हैं, जैसे टीकाकरण, सभी के लिए मास्क की अनिवार्यता, सैनेटाईजर एवं साबुन की व्यवस्था इत्यादि। अभी तक भारत में सभी वयस्कों का सम्पूर्ण टीकाकरण एवं 12 से 18 वर्ष के बच्चों का लगभग टीकाकरण हो चुका है। हम सभी को सरकार के प्रयासों को सफल बनाने के लिए उनके नियमों का पालन करना चाहिए तथा सामाजिक दूरी बनाते हुए टीकाकरण जरूर कराना चाहिए। समाज में सौहार्दता बनाते हुए मानवीयता का परिचय देना चाहिए साथ ही बच्चों को उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार करना चाहिए।

प्रणाम प्रेम है।

प्रणाम अनुशासन है।

प्रणाम शीतलता है।

प्रणाम आदर सिखाता है।

प्रणाम से सुविचार आते है।

प्रणाम झुकना सिखाता है।

प्रणाम क्रोध मिटाता है।

प्रणाम आँसू धो देता है।

प्रणाम अहंकार मिटाता है।

प्रणाम हमारी संस्कृति है|

विचार

संकलित

एक दिन एक व्यक्ति ऑटो से रेलवे स्टेशन जा रहा था। ऑटो वाला बड़े आराम से ऑटो चला रहा था। एक कार अचानक हीं पार्किंग से निकलकर रोड पर आ गयी । ऑटो चालक ने तेजी से ब्रेक लगाया और कार, ऑटो से टकराते टकराते बची । कार चालक गुस्से में ऑटो वाले को ही भला-बुरा कहने लगा जबकि गलती कार-चालक की थी । ऑटो चालक एक सत्संगी (सकारात्मक विचार सुनने-सुनाने वाला) था । उसने कार वाले की बातों पर गुस्सा नहीं किया और क्षमा माँगते हुए आगे बढ़ गया ।

ऑटो में बैठे व्यक्ति को कार वाले की हरकत पर गुस्सा आ रहा था और उसने ऑटो वाले से पूछा तुमने उस कार वाले को बिना कुछ कहे ऐसे ही क्यों जाने दिया । उसने तुम्हें भला-बुरा कहा जबकि गलती तो उसकी थी । हमारी किस्मत अच्छी है, नहीं तो उसकी वजह से हम अभी अस्पताल में होते ।

ऑटो वाले ने कहा साहब बहुत से लोग गार्बेज ट्रक (कूड़े का ट्रक) की तरह होते हैं । वे बहुत सारा कूड़ा अपने दिमाग में भरे हुए चलते हैं । जिन चीजों की जीवन में कोई ज़रूरत नहीं होती उनको मेहनत करके जोड़ते रहते हैं जैसे क्रोध, घृणा, चिन्ता, निराशा आदि । जब उनके दिमाग में इनका कूड़ा बहुत अधिक हो जाता है तो वे अपना बोझ हल्का करने के लिए इसे दूसरों पर फेंकने का मौका ढूँढ़ने लगते हैं ।

इसलिए मैं ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखता हूँ और उन्हें दूर से ही मुस्कराकर अलविदा कह देता हूँ । क्योंकि अगर उन जैसे लोगों द्वारा गिराया हुआ कूड़ा मैंने स्वीकार कर लिया तो मैं भी एक कूड़े का ट्रक बन जाऊँगा और अपने साथ साथ आसपास के लोगों पर भी वह कूड़ा गिराता रहूँगा ।

मैं सोचता हूँ जिंदगी बहुत ख़ूबसूरत है इसलिए जो हमसे अच्छा व्यवहार करते हैं उन्हें धन्यवाद कहो और जो हमसे अच्छा व्यवहार नहीं करते उन्हें मुस्कुराकर माफ़ कर दो । हमें यह याद रखना चाहिए कि सभी मानसिक रोगी केवल अस्पताल में ही नहीं रहते हैं। कुछ हमारे आस-पास खुले में भी घूमते रहते हैं ।

प्रकृति के नियम: यदि खेत में बीज न डाले जाएँ तो कुदरत उसे घास-फूस से भर देती है। उसी तरह से यदि दिमाग में सकारात्मक विचार न भरें जाएँ तो नकारात्मक विचार अपनी जगह बना ही लेते हैं ।

दूसरा नियम है कि जिसके पास जो होता है वह वही बाँटता है। "सुखी" सुख बाँटता है, "दुःखी" दुःख बाँटता है, "ज्ञानी" ज्ञान बाँटता है, भ्रमित भ्रम बाँटता है, और "भयभीत" भय बाँटता है । जो खुद डरा हुआ है वह औरों को डराता है, दबा हुआ दबाता है ,चमका हुआ चमकाता है ।

हज़ार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सच्चा विजयी है|

- गौतम बुद्ध

वर्तमान की जरूरत -शिक्षा के साथ विद्या

नवीन कुमार, सहायक

ज्ञान एक सागर है,समुद्र है,जिसका न तो कोई आदि है और न ही कोई अन्त है अर्थात् ज्ञान अनन्त है, असीमित है। इस सृष्टि में जितनी भी वस्तुएँ हैं, उनमें ज्ञान निहित है। किसी भी वस्तु के बारे में जानना ही ज्ञान कहलाता है। जब हम किसी भी प्रकार का कार्य करते हैं, तो उस कार्य को करने के दौरान हम पढ़ते हैं, जानते हैं, समझते हैं। जिसके फलस्वरूप हमें उस कार्य से सम्बंधित शारीरिक या मानसिक अनुभव होता है। यह शारीरिक या मानसिक अनुभव ही हमारा उस किये गये कार्य से सम्बंधित ज्ञान है।ज्ञान को मुख्यतः दो प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है - शिक्षा एवं विद्या।

शिक्षा:- शिक्षा का अर्थ है - सीखना। शिक्षा मुख्यतः दो प्रकार की होती है- औपचारिक एवं अनौपचारिक। जो शिक्षा हम स्कूल] कॉलेज] विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी शिक्षण संस्थान से प्राप्त करते हैं, वह औपचारिक शिक्षा है। इस प्रकार की शिक्षा में एक निश्चित पाठ्यक्रम होता है। जैसे – अंग्रेजी] गणित] विज्ञान आदि का सीखना।

जब शिक्षा हमें घर - परिवार एवं समाज से मिले, तो उसे हम अनौपचारिक शिक्षा कहते हैं। इस प्रकार की शिक्षा में हम परिवार एवं समाज में स्थापित प्रथाओं एवं परम्पराओं के अनुसार सीखते हैं। जैसे - उठना – बैठना] अपने से बड़ों एवं छोटों के साथ किये जाने वाले व्यवहार का सीखना।

विद्या:-विद्या का अर्थ है - बुद्धि एवं विवेक के अनुसार ज्ञान का अर्जन। विद्या के बल पर ही हम धर्म एवं अधर्म (सही एवं गलत) अच्छाई एवं बुराई में फर्क करना सीखते हैं। ईश वन्दना, ध्यान, योग, व्यायाम एवं वेद - पुराणों का अध्ययन विद्या ग्रहण करने के प्रमुख स्रोत हैं।

प्राचीन काल में हमारे देश में गुरूकुल शिक्षण पद्धति के माध्यम से शिक्षा एवं विद्या दोनों ही माध्यमों से हमें ज्ञान दिया जाता था। जहॉ शिक्षा प्राप्त करने पर हम अपने जीविकोपार्जन हेतु अर्थ प्राप्ति हेतु निपुण होते थे, वहीं विद्या प्राप्त करने पर हम अपनी आत्मा के निकट पहुँचते थे अर्थात् अच्छा इंसान बनते थे।

शिक्षा इहलोक से सम्बंधित है और विद्या परलोक से सम्बंधित है। जहाँ शिक्षा हमें इस संसार में व्यवस्थित रूप से जीना सिखाती है वहीं विद्या हमें मोक्ष कैसे प्राप्त किया जाये सिखाती है।

कालान्तर में जब अंग्रेज हमारे देश में व्यापार हेतु आये और अपने साम्राज्य के विस्तार हेतु सम परिस्थितियॉ पाये जाने पर, शासन व्यवस्था सुचारू रूप से चल सके, मात्र इस उद्देश्य से केवल अपने फायदे के लिए हमारे देश में स्थापित गुरूकुल शिक्षण पद्धति के विपरीत एक नयी शिक्षण पद्धति की शुरूआत की जिससे उनके शासन को सुचारू रूप से चलाये जाने हेतु लिपिकीय वर्ग के लोगों की जरूरत पूरी हुई।

वर्तमान में हमारे देश में लगभग सभी प्रदेशों में अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गयी शिक्षण पद्धति से ही शिक्षा प्रदान की जाती है जो कि हमें रोजगार प्रदान करने में तो सहायक हो सकती है किन्तु आत्म दर्शन में नहीं।

अंग्रेजों द्वारा स्थापित शिक्षण पद्धति का प्रभाव यह हुआ कि हमारे देश में केवल शिक्षा का ही प्रभाव रह गया एवं विद्या धीरे-धीरे समाप्त हो गयी। लोगों के जीवन में भौतिकता ने तो अपनी जगह गहरे बना ली किन्तु उनके जीवन में आध्यात्मिकता का नामोनिशान न रहा।

आप सभी लोगों से कुछ बिन्दुओं पर मेरे प्रश्न हैं, कृप्या विचार कीजिएगा –

1. वर्तमान में लगभग सभी माता - पिता अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करवाने हेतु अपना सब कुछ न्यौछावर कर देते हैं और इस बात की भनक भी बच्चों को नहीं लगने देते कि उन्होंने उनको काबिल बनाने हेतु अपना सबकुछ न्यौछावर कर दिया है। उस बच्चे ने केवल शिक्षा ही पाई किन्तु जो विद्या उसको शिक्षण संस्थानों, परिवार, समाज आदि से मिलनी चाहिए, वह उसको नहीं मिल पाई। ऐसे में वह बच्चा नौकरी पाने पर विदेश में स्थापित होने के बाद अपने वृद्ध माता - पिता के प्रति केवल कभी - कभार फोन पर मात्र औपचारिकता निभाता है।

क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि यदि आज हम गुरूकुल शिक्षण पद्धति से शिक्षा नहीं दे सकते, लेकिन बच्चों में आत्म चिंतन करने एवं धर्म-अधर्म सही-गलत, भलाई-बुराई में फर्क करने में सक्षम करने हेतु नैतिक शिक्षा जैसे विलुप्त विषय को नियमित रूप से कम से कम इण्टरमीडिएट तक के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाये। जरा सोचिएगा . . .

2- आज हमारे देश में भ्रष्टाचार की समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है। वर्तमान में भ्रष्टाचार की समस्या शिक्षा, चिकित्सा एवं न्याय के क्षेत्र में भी अपनी जड़ें गहरी जमा चुकी हैं। ऐसे में ऐसा प्रतीत होता है कि यह जल्द ही विद्या का विकास हमारे शिक्षण पद्धति में नहीं किया गया तो हमारा देश गर्त में चला जायेगा। जरा सोचिएगा . . .

3. आज हमारे देश में आर्थिक रूप से सफल व्यक्तियों द्वारा आत्महत्या किये जाने की खबरें भी यदा-कदा आती रहती है। यदि उन्हें विद्या के माध्यम से मानसिक रूप से सबल बनाया गया होता तो वे विषम परिस्थितियों में भी अपने आपको सुरक्षित महसूस करते और आत्महत्या जैसे कृत्य की ओर अग्रसर न होते। जरा सोचिएगा . . .

4. आज हमारे देश में व्याप्त ग्रामीण बेरोजगारी की समस्या भी विद्या के माध्यम से कुछ हद तक दूर की जा सकती है। यदि हमारे देश के तमाम ग्रामीण निवासियों को यह समझ में आ जाये कि अपना गाँव, शहर की तमाम चका - चौंध से अच्छा है। जरा सोचिएगा . . .

5. आज हमारे देश में तमाम विद्यार्थी परीक्षा देने से डरने लगे हैं। उन्हें फेल होने से डर लगता है। जिस कारण उन्हें मानसिक बीमारियॉ होने लगी हैं। जिसके उपचार हेतु तमाम मनोचिकित्सक एवं न्यूरो चिकित्सक की आवश्यकता बढ़ गयी है।

यदि उन विद्यार्थियों को विद्या के माध्यम से स्वामी विवेकानन्द द्वारा कही गयी बात -"आप अपने जीवन में जोखिम लें, यदि आप जीतेंगे तो नेतृत्व करेंगे और यदि आप हारेंगे तो मार्गदर्शन करेंगे पढ़ाया गया होता तो वह परीक्षा से डरते नहीं । जरा सोचिएगा . . .

अन्त में यह यह सारगर्भित सारांश बतलाना आवश्यक है कि- "शिक्षा से मनुष्य भौतिकतावादी तमाम वस्तुओं को तो प्राप्त कर सकता हैं किन्तु मन का चैन, अच्छा स्वास्थ्य और अन्त में मोक्ष तो विद्या से ही प्राप्त हो सकती है"।

"हमें प्रयत्नपूर्वक हिंदुस्तान की सभी बोलियों व भाषाओं में जो उत्तम चीजें हैं, उन्हें हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाना चाहिए और यह प्रक्रिया अविरल चलती रहनी चाहिए।"

नरेन्द्र मोदी(प्रधानमंत्री)

आजादी के आईने

शशांक कुमार सिंह©, सहायक

आजादी के धुंधले आयाम को माणिक बनाऊँ मैं कैसे।
गाँधी-भगत-सुभाष के सपनों का देश लाऊँ मैं कैसे।

बेटियों के सुर्ख लाल दामन को श्वेत कराऊँ मैं कैसे।
भय के साए में पलते,को साहस का छत दिलाऊँ मैं कैसे।

पेट भरने वाले, के कटते पेट को बचाऊँ मैं कैसे।
खुद के साख से लटकते शव को इन हाथों में उठाऊँ मैं कैसे।
राम राज्य और सोने के चिड़िया का देश लाऊँ मैं कैसे।
वसुधैव कुटुम्बकम की इस जमीं को स्वर्णिम बनाऊँ मैं कैसे।

शांति के दीपक को घर-घर पहुचाऊँ मैं कैसे।
अशाँत-उलझे जीवन को इंद्रधनुष बनाऊँ मैं कैसे।
धर्म-मज़हब में बटें लोगों में "भारत" जगाऊँ मैं कैसे।
इंतकाम की अमावस में इंकलाब का सूरज लाऊँ मैं कैसे।

आजादी में आहुत मोतियों को वापस लाऊँ मैं कैसे।
उनकी शहीदी की महिमा का मंडन गाऊँ मैं कैसे।
कहने को है इतना कुछ तो मौन रह जाऊँ मैं कैसे।
आजादी के आईने में आजादी के माईने दिखाऊँ मैं कैसे।

मन एक भीरु शत्रु है जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है|
- प्रेमचंद

दशरथ मांझी

गोयल कुमार एम0टी0एस0

दशरथ माँझी एक ऐसा नाम है जो इंसानी जज्बे जुनून की मिसाल है वह दीवानगी, जो प्रेम की खातिर जिद में बदली और तब तक चैन नहीं जब तक पहाड़ का सीना चीर नहीं दिया।

जिसने रास्ता रोका उसे ही काट दिया। बिहार में गया के करीब गहलौर गाँव में दशरथ माँझी के माउंटेन मैन बनने का सफर उनकी पत्नी का जिक्र किए बिना अधूरा है। गहलौर और असपताल के बीच खड़े जिद्दी पहाड़ की वजह से साल 1959 में उनकी बीबी फाल्गुनी देवी का वक्त पर ईलाज नहीं मिल सका और वो चल बसी यहीं से शुरू हुआ दशरथ माँझी का इंतकाम।

22 साल की मेहनत पत्नी के चले जाने के गम से टूटे दशरथ माँझी ने अपनी सारी ताकत बटोरी और पहाड़ के सीने पर वार करने का फैसना किया लेकिन यह आसान नहीं था शुरूआत में उन्हे पागल तक कहा गया। दशरथ माँझी ने बताया था कि गाँव वालों ने शुरू में कहा कि मैं पागल हो गया हूँ लेकिन उनके तानों ने मेरा हौसला और बढ़ा दिया कि अकेला शख्स पहाड़ भी फोड़ सकता है। साल 1960 से 1982 के बीच दिन-रात दशरथ माँझी के दिलों-दिमाग में एक ही चीज ने कब्जा कर रखा था, पहाड़ से अपनी पत्नी की मौत का बदला लेना और पहाड़ ने माँझी से हार मानकर 360 फुट गहरा और 30 फुट चौड़ा रास्ता दे दिया।

दशरथ माँझी तो दुनिया से चले गये लेकिन यादों से नहीं। दशरथ माँझी द्वारा गहलौर पहाड़ का सीना चीरने से गया के अतूरी और वजीरगंज ब्लाक का फासला 80 किलोमीटर से घटकर 13 किलोमीटर रह गया। केतन मेहता ने उन्हे गरीबों का शाहजहाँ करार दिया। साल 2007 में जब 73 बरस की उम्र में दशरथ माँझी दुनिया छोड़ गये तो पीछे रह गई पहाड़ पर लिखी उनकी वो कहानी, जो आने वाली पीढ़ियों को सबक सिखाती रहेगी।

"आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में हम सब हिंदी प्रेमियों को यह संकल्प लेना चाहिए कि जब आजादी के 100 वर्ष पूरे हों, तब तक राजभाषा और स्थानीय भाषाओं का दबदबा इतना बुलंद हो कि किसी भी विदेशी भाषा का सहयोग न लेना पड़े।"

अमित शाह(गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री)

पूर्णागिरी बाँध
(एक संस्मरण)

प्रमेश बिष्ट, अधिकारी सर्वेक्षक

पंचेश्वर बहुद्देशीय परियोजना, भारत- नेपाल के आपसी सहयोग से बनने वाली एक बड़ी परियोजना है। इस परियोजना के अंतर्गत 3 बाँध बनने थे। एक बाँध टनकपुर कस्बे के पास स्थित ठुलिगाड नामक स्थान पर बनना है। इस बाँध का नाम पूर्णागिरी बाँध प्रस्तावित है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की फील्ड पार्टी संख्या 1 को इस बाँध का मानचित्रण कार्य सौंपा गया। वर्ष 2000-2001 के दौरान इस बाँध का सर्वेक्षण कार्य किया गया। श्री दलबीर सिंह रावत जी के नेतृत्व में फील्ड पार्टी टनकपुर रवाना हुई। इस फील्ड कार्य हेतु मुझे भी जाना पड़ा । भारत – नेपाल के आपसी सहयोग से इस परियोजना का कार्य होना था तो इस परियोजना के सर्वेक्षण के लिए नेपाल सर्वेक्षण विभाग, काठमांडू से भी कुछ सर्वेक्षक इस कार्य के लिए आये हुए थे, लेकिन इस परियोजना का सारा कार्य, फील्ड पार्टी संख्या 1 द्वारा ही पूर्ण किया गया।

इस बाँध के कैचमेंट एरिया का सर्वेक्षण कार्य 1:5,000 के माप पर किया गया। समोच्च अंतराल (कन्टूर इन्टरवल)1.0 मीटर था। इस कार्य हेतु दूरी नापने का कार्य मीटर टेप और क्लिनोपोल से किया जा रहा था। इस बाँध के डैम एक्सिस के सर्वेक्षण के लिए मुझे, श्री रावत जी के साथ काम करने का मौका मिला। डैम एक्सिस का प्लान 1:2,000 के माप पर किया जाना था। समोच्च अंतराल (कन्टूर इन्टरवल) 0.5 मीटर था। डैम एक्सिस का क्षेत्र एक बहुत ही ज्यादा खड़ी (स्टीप)चट्टानी भाग में था, इस वजह से क्लिनामीटर तथा क्लिनोपोल यंत्रों से ऊँचाई और दूरी नापने में कठिनाई हो रही थी। इस कार्य हेतु दूरी और ऊँचाई नापने का कार्य मीटर टेप से या थ्योडोलाइट से लेवलिंग स्टेव्स की स्टेडिया दूरी नाप कर किया गया।

डैम एक्सिस का पटल सर्वेक्षण, श्री रावत जी द्वारा किया गया। दूरी और ऊँचाई नापने का कार्य मुझे सौंपा गया। हम दोनों ने मिलकर यह कार्य 1 महीने में पूर्ण किया। इस दौरान मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। उनके द्वारा पटल चित्र पर डैम एक्सिस का मानचित्रण बड़ा ही सटीक था। काली नदी के किनारे मौजूद बड़े-बड़े नुकीले पत्थरों को उनके पटल द्वारा पटल चित्र पर दर्शाना, मानो किसी ने ऊपर से श्वेत-श्याम फोटो खींच कर सामने रख दी हो। उनके द्वारा बनाया गया कन्टूर प्लान, डैम एक्सिस का त्रि आयामी चित्रण अपने आप में एक कलाकारी थी।

संस्मरण लिखने के दौरान गूगल अर्थ में इसी क्षेत्र को एक बार फिर देखा। अभी भी वहाँ कुछ नहीं बदला है।

इसी फिल्ड कार्य के दौरान मुझे पूर्णागिरी मंदिर के दर्शन करने का भी मौका मिला। मंदिर के प्रांगण से बाँध का क्षेत्र साफ दिखाई पड़ता है। हमको तो वह क्षेत्र हरा भरा दिखाई देता था। सोचा कभी मौका मिला तो अपने परिवार को यहाँ घुमाने जरूर लाऊँगा। वर्ष 2006 के दौरान मुझे अपने परिवार सहित वहाँ जाने का मौका मिला। मेरे परिवार को भी पूर्णागिरी मंदिर का भ्रमण बड़ा अच्छा लगा। मेरी पत्नी ने मुझ से पूछा कि सरकार ने इन रूखे सूखे पहाड़ों को सर्वे करने के लिए आपको डॉलर क्या समझ कर दिए थे। अब परिवार को कौन समझाए कि हम फील्ड कर्मियों के काम कुछ ऐसे ही होते हैं। किसी भी स्थान का डेवलपमेन्ट करने के लिए पहले उसका सर्वे किया जाता है बाद में उस क्षेत्र के डेवलपमेन्ट के बाद पब्लिक को उस स्थान के महत्व का पता चलता है।

पिछले साल 2021 में श्री रावत जी की कोरोना महामारी के कारण मृत्यु हो गई है। इस लेख के माध्यम से उस पवित्र आत्मा को मेरी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत है।

।।आखिर तो मिट्टी हो जाना है ।।

सब पाकर फिर खो जाना है.....

आखिर तो मिट्टी हो जाना है ।

कल झगड़े आज गले मिलो....

फिजूल मन में बैर बसाना है ....

आखिर तो मिट्टी हो जाना है ।

उतार चढ़ाव और सुख दुख.....

जिन्दगी का ताना बाना है....

आखिर तो मिट्टी हो जाना है ।

वक्त साथ नहीं तो तेरा क्या....

तू खुद ही एक जमाना है....

आखिर तो मिट्टी हो जाना है ।

अजय पटेल
एम0टी0एस0

अर्थी की अर्थव्यवस्था

शशांक कुमार सिंह, सहायक

अर्थी की अर्थव्यवस्था एक दिन चरमरा गई,
जब लकड़ी की जगह
प्लास्टिक की अर्थी बाजार में आ गई।
कोई बोला अच्छा है,
अर्थी ज्यादा वक़्त तक काम चलाएगी।
अपने साथ-साथ यारों,
पड़ोसियों के भी काम आएगी।
किसी ने कहा, शव यात्रा में जाना तो रस्म निभाना है,
शमशान से सीधा प्रसारण करवा लो,
इंटरनेट का ज़माना है।
कोई बोला, थोड़ा चलना भी सेहत के लिए अच्छा ही होगा,
आखिर स्मार्ट घड़ियों के खतरे के भोंपू को भी चुप कराना है।
पूरा मीनू बनाया गया, ऑनलाइन जाकर चढ़ावा चढ़ाया गया,
जाहिर है इस पूरे तमाशे में सिर्फ
पालतू कुत्ता रोता हुआ पाया गया।
दूर-दूर के रिश्तेदारों ने मोबाइल पर श्रद्धांजलि दे डाली,
जो आये, उन्होंने मौका देख, अर्थी के साथ एक सेल्फी ले डाली।
जो बुजुर्ग आये थे, वो अपना भविष्य देख के पछता रहे थे,
न आते तो अच्छा था, गफलत ही सही, जिए जा रहे थे।
बजट अभी बाकी था, तो कुछ समझदारों ने बोतलें मँगवा ली
दुःख घटाने के लिए सबने, अपनी-आपनी पसंद चढ़ा ली।
दिन खत्म हुआ तो किसी को रोते हुए कुत्ते का ख्याल आया,
घर छान मारा पर वा कहीं नज़र नहीं आया।
इंसान होता तो शयद इस्तीफ़ा लिखकर दे जाता,
लेकिन वो तो कुत्ता था, इंसान जितना कैसे गिर जाता।
शायद दुम दबाये, चुप-चाप, जंगल की ओर भाग गया,
ऐसी ज़िन्दगी और ऐसी मौत से क्या पाया,
नंगा आया और नंगों ने नंगा ही दफनाया।।

कामनाएँ समुद्र की भाँति अतृप्त हैं। पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढ़ता है।

-स्वामी विवेकानंद

साम्राज्यवाद का नाश हो

कभी न हो मन में भय काई उन्नति का सदा प्रयास हो ।
दानवता का अन्त और मानवता का उद्विकास हो ।
राष्ट्र राष्ट्र को खा जाने के कुत्सित विचार का ह्रास हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास सामाज्यवाद का नाश हो ।

संकीर्ण विचार छोड़ दुनिया में नये स्रजन की आस हो ।
दुर्बल और प्रबल का भेद मिटा कर समानता का वास हो ।
सत्य, तर्क और विवेक से नव युग का शिलान्यास हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास सामाज्यवाद का नाश हो ।

देख दृश्य नर संघारों के ये वसुधा अब न उदास हो ।
बहुत हुए संग्राम विश्व में अब न रक्त की प्यास हो ।
नफरत, घृणा और वैमनश्यता का अब न क्रूर इतिहास हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास सामाज्यवाद का नाश हो ।

जैविक व रासायनिक हथियारों न सृष्टि का सर्वनास हो ।
गोला, तोप और एटम बम का बस संग्रहालयों में निवास हो ।
नैसर्गिक वरण का नियम तोड़ अब न प्रकृति विनाश हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास सामाज्यवाद का नाश हो ।

विश्व बन्धुता की प्रबल भावना का प्रचलन और विकास हो ।
धरती के सारे जीवों का हित और अन्योन्य अकूत विस्वास हो ।
राम राज्य के शुभ समने का सम्पूर्ण धरा पर विन्यास हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास सामाज्यवाद का नाश हो ।

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना, यही तपस्या का स्वरूप है|

-संत तिरुवल्लुवर

स्वामित्व योजना एक चुनौती- उत्तर प्रदेश

प्रदीप कुमार आर्य, अधीक्षण सर्वेक्षक

'स्वामित्व' हिन्दी का शब्द, जो अंग्रेजी के शब्द SVAMITVA – **S**urvey of **V**illage **A**nd **M**apping with **I**mprovised **T**echnology in **V**illage **A**rea से उत्पत्ति किया गया है। स्वामित्व कार्य के अंतर्गत ग्रामों के अधिकृत आबादी वाले क्षेत्र में बने घर का मालिकाना हक दिलाने का एक दस्तावेज है । इस दस्तावेज का निवास स्थान के सत्यापन के लिए उपयोग भी कर सकते है, साथ ही साथ भारत के किसी भी वित्तीय संस्थान से वित्तीय सेवायें भी प्राप्त कर सकते हैं। स्वामित्व का हिन्दी में अर्थ सम्पत्तियों पर मालिक के अधिकार को दर्शाता है, जो कि वर्षो से ग्रामीण क्षेत्र इससे वंचित था ।

स्वामित्व योजना के लिए Improvised Technology उपयोग किया गया, यानि तुरन्त-फुरत, जिसके लिए ड्रोन सर्वेक्षण एक विकल्प के रूप में लिया गया। ड्रोन सर्वेक्षण द्वारा ग्रामों के ऊपर उड़ान भर कर उसका हवाई चित्र लिया जाता है। इसमें एक दिन में 3-4 ग्रामों के आबादी क्षेत्र का हवाई चित्रण आसानी से पूर्ण किया जा सकता है । उक्त हवाई चित्रों को कार्यालय में प्रोसेसिंग किया जाता है, प्रोसेसिंग के अंतर्गत इन हवाई चित्रों को जियोटैगिंग एवं मोजाइकिंग किया जाता है । मोजाईक मानचित्रों को प्रथम चरण में अंकीयकरण कर मानचित्र-1 तैयार करने के बाद संबंधित जिले के कार्यालय में भेजा जाता है, जिसमे मानचित्रों पर सभी आबादी के घर को सूचीबद्ध एवं संख्याकृत कर जिले, इस कार्यालय में वापस भेजते है ।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी द्वारा राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस दिनांक 24-04-2020 को इस केन्द्रीय योजना SVAMITVA का स्वरूप दिया गया जिसके अंतर्गत ड्रोन सर्वेक्षण पर आधारित ग्रामीण आबादी क्षेत्रों के लोंगो को सम्पदा कार्ड प्रदान करना है । इस योजना में राज्य सरकार के राजस्व विभाग, पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार एवं भारतीय सर्वेक्षण विभाग सम्मिलित रूप से मिलकर कार्यान्वित करते है । इस योजना की शुरूआत के लिए एक साथ 8 राज्यों का पायलट प्रोजेक्ट के लिए चुनाव किया गया, जिसमें हमारा उत्तर प्रदेश एक महत्वपूर्ण राज्य है ।

हमारे कार्यालय में प्रधानमंत्री की घोषणा के समय एक भी ड्रोन यंत्र नहीं था । सर्वेक्षण के बाद क्या-क्या करना था इसका भी कोई अंदाजा नहीं था, हमारे यहाँ काम करने वाले सर्वेक्षकों/ अधिकारियों को सबसे बड़ा भय ड्रोन फ्लाइंग के बाद ठीक से वापस आयेगा या नहीं यह भी अंदाजा नहीं था । फिर भी हमें इस कार्य की शुरूआत करना था, हमारे निदेशक महोदय द्वारा भारत के महासर्वेक्षक कार्यालय से सम्पर्क कर एक ड्रोन यन्त्र और पायलट पहली उड़ान हेतु मांग किया गया। उस दौरान CORONAके भय से पूरा देश लॉक डाउन की स्थित में था। यद्यपि उस साल हमारे देश में कोरोना उतना प्रभावी नहीं रहा लेकिन मौत से डर तो सबको लगता है । तत्पश्चात 08 जून,

2020 को स्वामित्व योजना के MoU पर निदेशक महोदय एवं अध्यक्ष एवं सचिव, राजस्व विभाग के मध्य हस्ताक्षर किया गया ।

हमारे कार्यालय ने बाराबँकी जिले के 05 ग्रामों को पायलट प्रोजेक्ट के लिए जून, 2020 के अंतिम सप्ताह के अंतिम दिन का चुनाव किया गया, उस दिन आसमान में बादल छाये हुए थे, पहले ग्राम में उड़ानहेतु, ड्रोनग्राम के एक खेत से उड़ान भरने के लिए तैयार था। ग्राम में राजस्व विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, बाराबँकी जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक अन्य वरिष्ठ अधिकारियों, भारतीय सर्वेक्षण विभाग के निदेशक एवं ड्रोन टीम ने सबकी उपस्थित में पहली उड़ान भरी । ड्रोन बादलों के कारण ओझल हो गयाएवं मिशन प्लान के अनुसार ड्रोन फ्लाइंग पूर्ण कर वापस उड़ान भरने वाले स्थान पर लैण्ड किया, इस तरह पॉचों ग्रामों का ड्रोन सर्वेक्षण किया गया । कार्यालय में उसका डाटा प्रोसेस कर 05 ग्रामों के मानचित्र बनाये गये एवं उ0प्र0 राजस्व विभाग के अध्यक्ष एवं सचिव के समक्ष प्रस्तुत किया गया ।

तत्पश्चात उ0प्र0 के लगभग 1,10,000 ग्रामों के आबादी वाले क्षेत्रों के ड्रोन सर्वेक्षण का एवं उसका सम्पदा कार्ड का कार्य मिल चुका है, जिसके कार्य की समय सीमा 2 साल निर्धारित थी । जून, 2020 में इस कार्यालय में न तो ड्रोन प्रशिक्षित सर्वेक्षक न ही पर्याप्त ड्रोन थे । भारत के महासर्वेक्षक के कार्यालय से 05 ड्रोन प्रदान किये गये । ड्रोन उड़ाने के प्रशिक्षण के लिए ट्रिनिटी के इंजीनियरों द्वारा इस कार्यालय के सर्वेक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षण के साथ-साथ विश्वास दिलाने हेतु प्रेरित किया गया । साथ-साथ उ0प्र0 के कई जिलों में जाकर उप जिलाधिकारी, तहसीलदार, लेखपाल, ग्राम स्तर के अधिकारियों को ग्रामीण क्षेत्रों में स्वामित्व के संबंध में बताया गया । कई ग्रामों में ड्रोन फ्लाइंग के दौरान एक उत्सव का माहौल बना रहा, बहुत सारे ग्रामीण उत्सुक भी थे कि हमारे इस ग्रामीण सम्पदा की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर मिल जायेगी ।

समस्या इस कार्य को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करना था । इस कार्यालय में पूर्ण करने के लिए न ड्रोन यंत्र थे न पर्याप्त मानव क्षमता । इस कार्यालय में बिहार, गुजरात, छत्तीगढ़,झारखण्ड, असम, मेघालय, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड के कार्यालयों से इस कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अभ्याग्रहित किया गया है ।

वर्तमान में इस कार्यालय के 60 से 70 ड्रोन टीमें पिछले लगभग 2 वर्षों से निरन्तर इस ड्रोन सर्वेक्षण का कार्य कर रही है । साथ 30 ड्रोन टीमें संविदा पर कार्य कर रही है । उ0प्र की विशाल सीमा को ध्यान में रखते हुए झारखण्ड, उत्तराखण्ड, राजस्थान एवं दिल्ली स्थित कार्यालयों द्वारा आपने संशाधनों से ड्रोन सर्वेक्षण का कार्य कर रही है ।

ड्रोन सर्वेक्षण से डाटा के प्रोसेसिंग के लिए इस कार्यालय में उस स्तर के वर्क स्टेशन उपलब्ध नहीं थे । उस डाटा को हमारे यहाँ उपलब्ध संशाधनों से प्रोसेसिंग करने में 2-3 दिन तक या उससे ज्यादा भी समय लगता है । इस कमी के निवारण हेतु अन्य कार्यालयों से 8 मध्य स्तर वर्क स्टेशन मँगाये गये । जिससे कार्य में अपेक्षित प्रगति आयी । साथ ही साथ भारत के महासर्वेक्षक के कार्यालय द्वारा 10 मध्य स्तर के वर्क स्टेशनों को प्रदान करने पर प्रोसेसिंग की समस्या काफी कम हो गयी ।

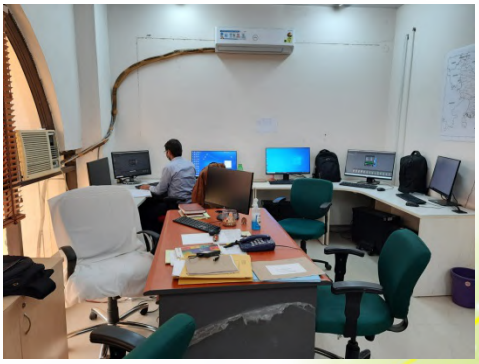

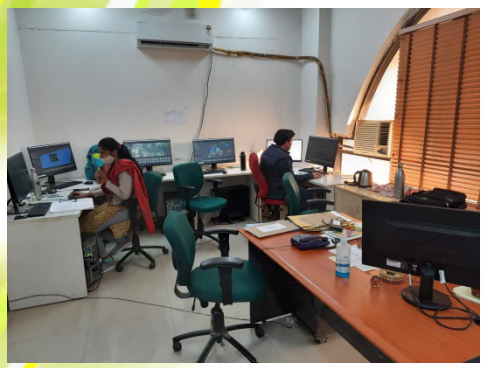

डाटा प्रोसेसिंग के पश्चात मोजाईक ईमेजों के मानचित्रण का कार्य जिससे लिए भी इस कार्यालय में डेस्कटॉप तो थे लेकिन इस कार्य के उपयुक्त नहीं थे, साथ-साथ इस कार्य को पूर्ण करने के लिए मानव क्षमता भी नहीं थी परन्तु इस कार्यालय में 50 इन्ट्री लेवल वर्क स्टेशनों को मँगाया गया । अंकीयकरण के लिए शुरूआत में 20 आई0टी0 प्रोफेसनल एवं वर्तमान में 100 आई0टी0 प्रोफेसनल तीन शिफ्ट में इस कार्यालय में कार्य कर रहे है । इस के साथ अंकीयकरण के लिए राष्ट्रीय भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, अंकीय मानचित्रण केन्द्र, जी0आई0एस0टी0 केन्द्र, देहरादून, मानचित्र विक्रय निदेशालय, देहरादून, जी0आई0एस0 एवं आर0एस0, हैदराबाद को इस कार्यालय से डाटा प्रदान कर अंकीयकरण कराने हेतु दिया जाता है । हमारे कार्यालय में पूरे भारत के कार्यालय समग्रित होकर कार्य को पूर्ण किया जा रहा है ।

ड्रोन सर्वेक्षण एवं प्रोसेसिंग से बहुत सारे डाटा उत्पन्न होता है । लगभग 1 ग्राम में 20 GBडाटा बनता है । जिसके लिए 1000 TBसे अधिक स्पेश का बैकअप सर्वर पर चाहिए था । लेकिन उस समय एन0एच0पी0 कार्य के लिए प्रदान किया गया 100TBसर्वर उपलबध था । समय के साथ 100 TB बहुत कम नजर आने लगा । जिसके लिए बाद में एक 400TB का सर्वर को लगाया कुछ हद तक बैकअप समस्या कानिवारण हुआ ।

इतने सारे वर्क स्टेशन, सर्वर लगाने पर हमारे कार्यालय में पूर्व निर्धारित पावर सप्लाई सिस्टम का फेल होना तो निश्चित था, और हुआ भी एक दिन । इस कार्यालय में पावर सप्लाई सीधे ग्रिड से है । उस दिन मुझे याद है कि निदेशक महोदय की तत्परता से पूरी विद्युत विभाग की टीम को लगाया गया । इस कार्यालय में विद्युत आपूर्ति पूरी तरह से बाधित थी । विद्युत टीम के साथ लगभग 8 बजे रात तक मैं था । मैंने देखा निदेशक महोदय भी वहाँ खड़े थे । मैंने कहॉ, सर आप जाईये तो उन्होने कहा कि आप जाईये मैं पूरी तरह से ठीक होने के बाद जाऊँगा । मैं तो अपने घर चला गया पता चला कि रात 11 बजे विद्युत आपूर्ति सूचारू रूप से चालू हो पायी । इतने सारे यंत्रों को सुचारू रूप से चलाने के लिए विद्युत आपूर्ति का लोड बढ़ाया गया । इस कार्यालय के30KVA UPS की क्षमता से100KVA UPS की क्षमता बढ़ायी गयी । साथ–साथ आटोमैटिक जनरेटर सिस्टम को भी दुरूस्त किया गया । इस सबसे विद्युत आपूर्ति की बाधा काफी हद तक दूर हो गयी ।

सबसे बड़ी समस्या थी जो सम्पदा कार्ड हम बना रहे उसका प्रारूप क्या होगा । इसके कितने स्तर होंगे । इसके लिए राज्य सरकार एवं भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने मिलकर 10 स्तर निर्धारित किये गये । प्रथम स्तर में प्रपत्र-1 जो चूना मार्किंग के अनुसार ग्राम के आबादी क्षेत्रों कीसम्पदा को चिन्हित एवं संख्याकृत करना है । प्रपत्र 2, 3 एवं 4 में प्रत्येक सम्पदा की सूचना संग्रहित करना है जिसे जिलें/तहसील के लेखपालों द्वारा सम्पदा के मालिक का नाम, पिता का नाम, मोबाईल नम्बर एवं आधार संख्या लिया जाता है । उसकी पूर्णतया जाँच भी तहसील स्तर के तहसीलदार द्वारा किया जाता है । राष्ट्रीय सूचना प्रणाली द्वारा इस कार्य के लिए घरौनी बेवसाइट को बनाया है । जिसपर तहसील स्तर पर पूर्ण रूप से जाँच कर सभी चिन्हित / संख्याकृत सम्पदाओं को प्रपत्र-5 के रूप में अपलोड करते है । इस कार्यालय द्वारा ग्रामों के प्रत्येक सम्पदा की लम्बाई, चौड़ाई, क्षेत्रफल लेखपाल द्वारा चिन्हित सम्पदा का अंकीयकरण किया जाता है । अंकीयकृत सम्पदा की पूर्ण सूचना इस कार्यालय द्वारा राजस्व विभाग में स्थित इस कार्य के लिए समर्पित राष्ट्रीय सूचना प्रणाली के कार्यालय में प्रेषित किया जाता है । राष्ट्रीय सूचना प्रणाली द्वारा प्रपत्र-7,8,9बनाया जाता है । प्रपत्र-9 मे आपत्तियां दर्ज करनेअवधि 15 दिन की होती है । तत्पश्चात सम्पदा पत्र प्रपत्र-10 जारी होता है ।

इस कार्यालय द्वारा जीरो से शुरूआत कर हिरोईक कार्य पूर्ण होने के करीब है । वर्तमान में 1,00,000 ग्रामों में से 50,000 ग्रामों से अधिक का कार्य पूर्ण कर लिया गया है । 5 ड्रोन से शुरूआत कर आज 90 से 100 ड्रोन नियमित उड़ान भर रहे है । उ0प्र0 मौसम के मामले मे विविधताओं से भरा हुआ है। जाड़े मे घना कुहरा, गर्मियों के मौसम मे तेज लू और आँधी, बरसात में मैदानों, खेतों एवं सड़कों पर पानी भर जाना, जो हमारे कार्य मे अवरोधक के रूप मे रहता था, इस सब से परे हमारी टीम निरन्तर कार्यरत है । दूसरा तोहफा महामारी का, इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों इस कार्य में कार्यरत रहते हुए 60-70% कोरोना संक्रमित हो गये इसके साथ ही उनके परिवार के सदस्य भी, फिर भी हौसला कम नहीं हुआ, संक्रमण के दौरान भी सभी कर्मियों ने पूरा योगदान दिया है ।

स्वामित्व योजना के कार्य प्रगति को लेकर साप्ताहिक उच्च स्तरीय विश्लेषण होता है । जिसमें भारतीय सर्वेक्षण विभाग के उच्च अधिकारी, पंचायती राज मंत्रालय के उच्च अधिकारी एवं राजस्व विभाग, उ0प्र0 के उच्च अधिकारी प्रतिभाग लेते है, जो प्रगति के लिय नियमित सलाह एवं सुझाव एवं निर्देश देते रहते है । जिसके कारण उ0प्र0 का स्वामित्व योजना का कार्य निरन्तर प्रगति पर है, जिसे शीघ्र ही पूर्ण कर लिया जायेगा।

फोटो गैलरी

भारत के महासवेक्षक महोदय का कार्यालय दौरा

कार्यालय परिसर में निदेशक महोदय एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

स्वच्छता पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण

कार्यशाला एवं प्रशिक्षण

मानचित्रण प्रतियोगिता पुरस्कार समारोह

स्वामित्व योजना

सेवा निवृत्ति का अवसर पर विदाई समारोह

स्वामित्व योजना

पंचायती राज

SVAMITVA YOJNA

OBJECTIVE / उद्देश्य

'SVAMITVA' (Survey of Village Abadi and Mapping with Improvised Technology in Village Area) is a Central Sector Scheme launched by Hon'ble Prime Minister of India on National Panchayat Day ie 24th April 2020.

The scheme aims to provide an integrated property validation solution for rural India. The demarcation of rural abadi areas would be done using Drone Surveying Technology. This would provide the 'Record of Rights' to village household owners possessing houses in inhabited rural areas in villages which, in turn, would enable them to use their property as a financial asset for taking loans and other financial benefits from Bank. It will benefit approximately 1.10 lakh Revenue Village habitants in UP.

'स्वामित्व' भारत सरकार की एक योजना है जिसका शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रीय पंचायत दिवस (२४ अप्रैल २०२०) के अवसर पर किया गया है इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण भारत के लिए एक एकीकृत संपत्ति सत्यापन समाधान प्रदान करना है। ड्रोन सर्वेक्षण तकनीक का उपयोग कर ग्रामीण आबादी क्षेत्रों का सीमांकन किया जाएगा। इससे गाँवों में बसे ग्रामीण क्षेत्रों में घरों में रहने वाले गाँव के गृहस्वामियों को 'अधिकार का रिकॉर्ड' प्रदान किया जाएगा, जो बदले में, उन्हें बैंक से ऋण लेने और अन्य वित्तीय लाभ के लिए एक वित्तीय संपत्ति के रूप में अपनी संपत्ति का उपयोग करने में सक्षम करेगा।इसका लाभ यूपी में लगभग 1.10 लाख राजस्व गांवों के निवासियों को मिलेगा।

IN COLLABORATION WITH

Panchayati Raj
Ministry of Panchayati Raj
Govt. of India

Department Of Revenue

Survey of India

WORK FLOW

LARGE SCALE MAPPING USING DRONE : FLYING AND DATA PROCESSING

MAPPING BY DRONE TECHNOLOGY: WHY

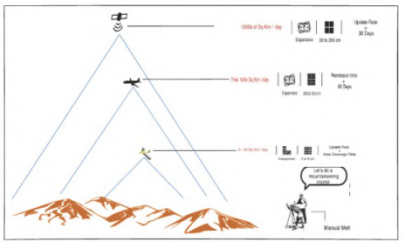

MAPPING BY DRONE TECHNOLOGY: WHAT

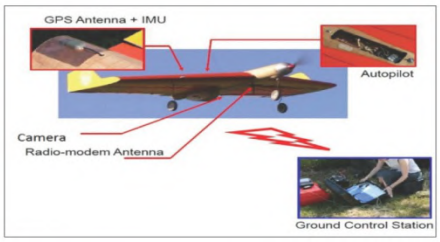

MAPPING BY DRONE TECHNOLOGY: WHAT

MAPPING BY DRONE TECHNOLOGY: HOW

ORI (ORTHO RECTIFIED IMAGE)

FEATURE EXTRACTED MAP

RECORD OF RURAL HABITATION (GHARAUNI)

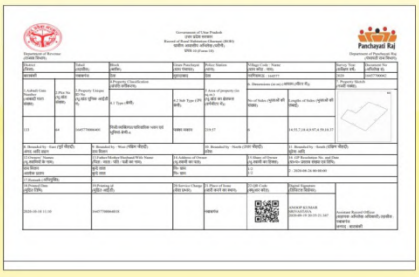

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, मानचित्र भवन, 5 विभूति खण्ड , गोमती नगर, लखनऊ

(विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार)